# श्री माहेश्वरी टाईम्स

अंक-5 अक्टूबर 2005 वर्ष - 1

RNI - MPHIN/2005/14721



*प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक*

**श्रीमती सरिता बाहेती**

☐

*सम्पादक*

**पुष्कर बाहेती**

☐

*अतिथि सम्पादक*

**गोपालचन्द्र डाड़**

☐

*कला निदेशक*

**अक्षय आमेरिया**

☐

*संरक्षक*

**श्री बंशीलाल राठी** (चैन्नई)

**श्री रामगोपाल मूंदड़ा** (सूरत)

**श्री बनवारीलाल जाजू** (इन्दौर)

☐

*परामर्शदाता*

**श्री बंशीलाल बाहेती**

**श्री मदनलाल पलौड़**

**श्री आर.आर. बाल्दी**

**श्री राजेन्द्र ईनाणी**

**श्री गोपाल गोदानी** (भोपाल)

**श्री ओमप्रकाश भराणी**

☐

*सम्पादकीय सलाहकार*

**श्री बंशीलाल भूतड़ा 'किरण'**

**श्री गोविन्द मालू**

**श्री दिनेश माहेश्वरी ( भूतड़ा )**

☐

*सम्पादन सहयोग*

**रामनिवास झंवर**

**प्रमोद मंत्री**

**शैलेष राठी**

**अशोक माहेश्वरी**

**दिलीप झंवर**

☐



*कार्यालय -*

**श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी,**

**उज्जैन ( म.प्र. ) 456001**

**दूरभाष - 0734- 2551307, 2559389**

**3094855 मोबाईल - 94250-91161**

E-Mail : sri_maheshwaritimes@yahoo.com


☐


स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन गोलामण्डी, उज्जैन ( म.प्र. ) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

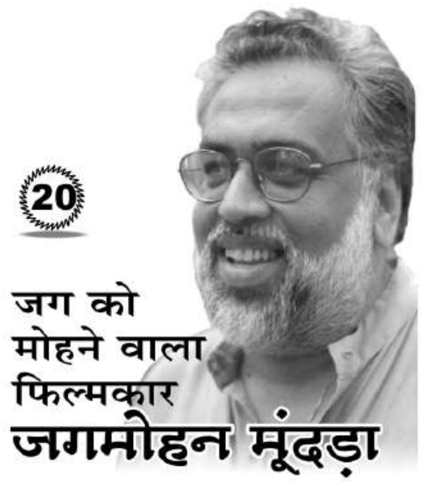


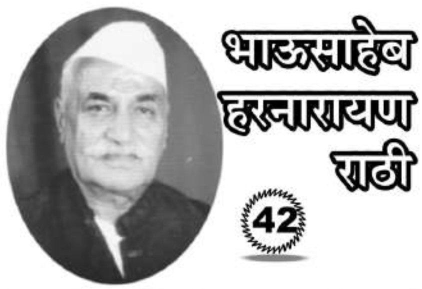

| | |
|---|---|
| एक से अनेक हुए माहेश्वरी | 4 |
| समाचार | 10-18 |
| उपलब्धि | 19 |
| ईईटी आधारित कराधान... | 23 |
| नज़रिया बदलिए... | 25 |
| चरित्र की चमक... | 29 |
| रियल एस्टेट एजेन्ट... | 30 |
| सफलता चाहिये... | 31 |
| सत्य कहीं भी हो... | 33 |
| स्वर्ण सूत्र | 33 |
| यंत्र-15 | 34 |
| संकेत सितारों का | 37 |
| छोटे नींबू के लाभ बड़े | 40 |
| हर गहना कुछ कहता है | 41 |
| शादी-ब्याह | 44 |
| जिज्ञासा-समाधान | 49 |
| मोटापा कारण और निदान | 50 |
| श्रद्धांजलि | 52 |



*'श्री माहेश्वरी टाईम्स' में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है। सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन ( म.प्र. ) रहेगा।*

# *शक्तिरूपेण संस्थिता . . .*

*भारतीय मनीषियों ने नारी शक्ति को सदैव सम्मान और आदर दिया है। सनातन परम्परा में हम शिव और शक्ति की पूजा करते आए हैं। समस्त चराचर जगत शक्तिमान का ही विस्तार है। कहा जा सकता है उसकी यही क्षमता शक्ति है। जाहिर है शक्ति के बिना शक्तिमान नहीं है तो शक्तिमान के बिना शक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती। एक दूसरे में समाहित यही युगल का लीला विस्तार सृष्टि के रूप में प्रकट है। यही सिद्धान्त समूचे जगत में दिखाई देता है। माहेश्वरी समाज की उन्नति और प्रगति में महिला संगठन का जो महत्वपूर्ण योगदान दिखाई देता है, उसे हम इसी दृष्टिकोण से समझ सकते हैं। हाल ही में सम्पन्न माहेश्वरी महिला संगठन के राष्ट्रीय अधिवेशन को मिली अपार सफलता से समाज को एक बार फिर नई दिशा और मार्गदर्शन मिला है। इस अधिवेशन के फैसले और प्रस्ताव समाज को नए तरीके से सोचने-विचारने का अवसर प्रदान करते हैं ताकि हम अपने समाज को और अधिक उत्कृष्ट और राष्ट्र के विकास में भागीदार बना सकें। माहेश्वरी समाज में महिलाओं की जागृति का ही परिणाम है कि अभी तक हम अपनी संस्कृति और परम्परा को अपनाएं हुए हैं। परिवार संस्था का जो आदर्श आज माहेश्वरी समाज में दिखाई देता है, वह अन्यत्र मिलना मुश्किल है। आज महिलाओं पर जिम्मेदारी का बोझ बढ़ता जा रहा है। अब महिलाओं से परिवार को संभालने की जिम्मेदारी के साथ-साथ अपने परिवार के व्यापार-व्यवसाय में हाथ बंटाने की उम्मीदें भी की जाने लगी हैं। आने वाले समय में महिलाओं पर यह जिम्मेदारी और बढ़ेगी। जरूरत है कि हम नई पीढ़ी को इसके लिए तैयार करें। कुरीतियों का तेजी से निवारण करना और बालिका शिक्षा को अधिकाधिक प्रोत्साहन देना आवश्यक है। नए जमाने की नारी अपने पति की सबसे बेहतर सहयोगी बने, इसके लिए बचपन से ही उसे संस्कारित और सुगठित किया जाना चाहिए। वस्तुतः शक्ति धन-दौलत, ताकत, पद और प्रभाव के प्रदर्शन में नहीं है। यह तो उस शक्ति का अंशमात्र भी नहीं है। वास्तविक शक्ति वह है जो हमें इन सबके बीच से ऊपर उठाए और वह असीम सुख व आनंद प्रदान करे जहां कोई संघर्ष न हो, कोई प्रतिस्पर्धा न हो, राग-द्वेष न हो। हम इस सृष्टि के कण-कण से प्रेम करें। शक्ति आराधना के इस माह में सम्पूर्ण समाज अपनी इसी शक्ति के प्रति सम्मान और आदर से भरा है।*

***-पुष्कर बाहेती***
सम्पादक

# श्रेष्ठ समन्वय से समाज का उन्नयन

*मूलतः भीलवाड़ा की सौंधी माटी की सौम्य महक के रुप में मंगरोप ग्राम के ग्रामीण परिवार के प्रतिभावान छात्र श्री गोपालचन्द्र डाड़ वर्तमान में रतलाम नगर निगम में आयुक्त के पद को सुशोभित कर रहे हैं। मध्यप्रदेश के मन्दसौर और खरगोन में भी प्रशासन के विभिन्न पदों को सुशोभित कर चुके श्री डाड़ आज भी समाज के लिए सहज हैं। ठेठ मध्यमवर्गीय किन्तु उच्च शिक्षित परिवार से आए इकतालीस वर्षीय श्री डाड़ भीलवाड़ा से एम.एस.सी. भौतिकी ( माइक्रोवेव इलेक्ट्रॉनिक ) के साथ राजस्थान विश्वविद्यालय की मेरिट सूची में रहे एवम् 1991 में डिप्टी कलेक्टर ( उप जिलाधीश ) के पद पर पदस्थ हुए।*

**गोपालचन्द्र डाड़**
*अतिथि सम्पादक*

*भगवान महेश की कृपा के साथ ही हमारे समाज का जन्म हुआ है। मूलतः क्षत्रिय वंशी होने पर भी हमने परिस्थितिवश प्रसन्नतापूर्वक स्वयं को वैश्य धर्म में ढाला है। हमारी यह विशेषता है कि हम में कोई जड़ता नहीं वरन् परिस्थिति के अनुसार स्वयं को ढालने की अतीव क्षमता है। हममें कोई आग्रह, विग्रह या दुराग्रह नहीं, अत्यन्त मुक्त भाव है और इन्हीं पुष्ट भावों से हम उन्नत भावी का आत्मीय सत्कार करते हैं, हमारे समाज का प्रादुर्भाव आरम्भ भी इसी बिन्दु में निहित है।*

*समाज की सही दिशा में पुरस्सरता युवा वर्ग के तेजस्वी सहयोग पर अधिक निर्भर है क्योंकि उत्साह, खतरों से खेलने की तत्परता, समस्याओं से जूझने की सामायिक ललक, ठहराव भरे जीवन में झरने का वेग, प्रदूषित वातावरण में पुष्पों की गंध, गर्त में जाते मूल्यों के दौर में चरित्र की ऊँचाई, दिन-प्रतिदिन सीमित होते सम्बन्धों में सागर सा विस्तार और हर नवीन मार्ग को खोजने में तल्लीनता के स्तर पर पहुँचना युवकों के पर्यायवाच्य सन्दर्भ हैं। माहेश्वरी समाज के ये संस्कारित गुण ही समाज को आगे बढ़ने की संरचना प्रदान करते हैं। सही दिशा में प्रणत मार्गदर्शन शक्ति और सामर्थ्य से परिपूर्ण तथा सामाजिक संचेतना प्रगति द्योत इस वय संधि को असंभव से भी संभव कर देने की महान् क्षमता प्रदान कर सकता है।*

*स्वभावतः व्यवसायी एवं उद्यमी होते हुए भी हम अपनी औद्योगिक प्रगति को विज्ञान सम्मत व नव तकनीक युक्त बनाने में अभी पीछे हैं। हमारे अनुवंश में उद्योग, वाणिज्य, अनुभव व ज्ञान की व्यापक परम्परा है, प्रबंधन के श्रेष्ठतम् अनुभवों का भण्डार है, पूंजी एकत्रिकरण का अकूट कौशल भी है, उदारता, दानशीलता व राष्ट्रीयत्व के भाव भी प्रचुर हैं किन्तु पूंजी का पूर्ण एवं सही उपयोग एवं संरक्षण के कोई विशेष उपाय नहीं होते हैं। हम युवा वर्ग में उच्च शिक्षा एवं नेतृत्व क्षमता का विकास करने में भी अन्य समाज से पीछे हैं। हमारा मूल क्षत्रिय है, हमें वणिक वर्ग के समस्त गुणों के साथ ही क्षत्रिय वर्ण के साहस, धैर्य, दृढ़ता, सुरक्षा एवं संरक्षण के गुणों को भी आत्मसात् करना होगा जिससे हमारे अत्यधिक परिश्रम से प्राप्त धनराशि आक्रांताओं से सुरक्षित रहे। अतः हमारा लक्ष्य मात्र असीमित धनोपार्जन ही नहीं हो अपितु नेतृत्व क्षमता एवं नैतिक मूल्यों के विकास का व्यापक सहयोगी दृष्टिबोध भी हो।*

*यदि युवा वर्ग अपने श्रेष्ठीवर्ग के समन्वय से समाज में यह भाव जागृत करने में भी समर्थ हो जाता है कि स्थानीय अथवा जिला या संभाग स्तर पर सहकारी उद्योगों की व्यापक स्थापना हो, जिसमे वर्तमान शासन के सहयोग का लाभ भी प्राप्त हो सके तो यह दशाब्दी की महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी। हृदय की भावना है कि इस विचार सूत्र का नेतृत्व रतलाम का सुसंगठित युवा वर्ग करें। 'श्री माहेश्वरी टाईम्स' के प्रत्येक पृष्ठ पर समाज की सम्मुन्नत भावनाओं की अगवानी कर रहे स्तंभों व लेखों का अवगाहन कर लाभ लें। जय महेश।*

**-गोपालचन्द्र डाड़**

# एक से अनेक हुए माहेश्वरी

■ **रामनिवास झंवर,** उज्जैन

**मा**हेश्वरी जाति की स्थापना के बाद धीरे-धीरे इस महान जाति का विकास हुआ और 72 उमरावों का परिवार फैला। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया त्यों-त्यों माहेश्वरी समाज के घर बढ़ते गये और कालांतर में तो लाखों की संख्या में माहेश्वरी हो गये। राजपूताना एक ऐसा स्थान है जहां पर सुविधा से उपार्जन करना बहुत ही कठिन है। अतएव बहुत अधिक संख्या बढ़ जाने के कारण इस जाति के साहसी पुरुष बाहर दूर-दूर के स्थानों पर जाकर वहीं निवास करने लगे। बहुत से परिवार ऐसे रहे कि जो उन्हीं प्रांतों में स्थायी रूप से निवास करने लगे।

उस समय रेल, मोटर तो दूर रही पैदल रास्ते भी अच्छे नहीं थे और चारों ओर लूट-खसोट आदि का खतरा बना रहता था। यही कारण है कि भिन्न-भिन्न प्रांतों में जाकर बसने वाले इस जाति के पुरुष अपने जन्म-स्थान से अपना संबंध न रख सके। धीरे-धीरे जिस-जिस प्रांत में ये लोग जाकर बस गये थे उस प्रांत की भाषा, रहन-सहन, रीति-रिवाज, पहनावा आदि इन लोगों ने अपना लिया और शताब्दियाँ वहां पर गुजार दी। ये लोग कहीं प्रांतों के नाम से, कहीं घटनाओं के नाम से माहेश्वरी पुकारे जाने लगे और इनका राजपूताना के बहुसंख्यक माहेश्वरी समुदाय से संबंध टूट गया। जैसे- कच्छ में जाकर बसने वाले कच्छी माहेश्वरी, काठियावाड और गुजरात में जाकर बसने वाले गुजराती माहेश्वरी, कोल (यू.पी.) में जाकर बसने वाले कोलवार माहेश्वरी, डीडवाना नामक स्थान से निकलने के कारण डीडू माहेश्वरी, जैसलमेर में निवास करने के कारण जैसलमेरी माहेश्वरी, सिंध प्रान्त में चले जाने के कारण सिंधी माहेश्वरी, धाकगढ़ में निवास करने के कारण धाकड़ माहेश्वरी और इसी प्रकार खण्डेलवाल माहेश्वरी कहलाए।

> **धीरे-धीरे जिस-जिस प्रांत में ये लोग जाकर बस गये थे उस प्रांत की भाषा, रहन-सहन, रीति-रिवाज, पहनावा आदि इन लोगों ने अपना लिया और शताब्दियाँ वहाँ पर गुजार दीं। ये लोग कहीं प्रांतों के नाम से, कहीं घटनाओं के नाम से माहेश्वरी पुकारे जाने लगे**

**डीडू माहेश्वरी-**

राजपूताना का डीडवाना नामक स्थान एक समय बड़ा समृद्धिशाली था। यहां पर हजारों माहेश्वरियों के घर थे। जो-जो घर इस डीडवाना नगर से बाहर निकले, वे अपने आप को डीडू माहेश्वरी कहने लगे।

**कच्छी और गुजराती माहेश्वरी-**

डीडवाना और नागौर से आज से करीब 300-350 साल पहले कुछ परिवार सूरत में व्यापार निमित्त आये। सूरत उस समय का एक समृद्धशाली व्यापारिक केन्द्र था। इसी प्रकार कच्छ प्रांत में भी बहुत से परिवार जाकर बस गये। इन सब लोगों का रहन-सहन उच्च, आचार-विचार शुद्ध, पहनावा गुजराती और प्रायः सब वल्लभ कुल सम्प्रदायी हैं। ये सब लोग कच्छी और गुजराती माहेश्वरी कहलाते हैं। इनमें लखोटिया, हेड़ा, बाहेती, मालपाणी, कालाणी, भूतड़ा, दाढ़, राठी, मालाणी, बियाणी, काकाणी, नागौरी आदि बहुत सी खापें पाई जाती हैं। इस समुदाय के अन्दर शिक्षा तथा कला-कौशल का बहुत प्रचार है। इस समाज में अनेकों ग्रेजुएट्स, इंजीनियर एवं शिक्षित व्यक्ति हैं जो अपने-अपने पेशे के नाम से जैसे जागीरदार, कॉन्ट्रेक्टर,

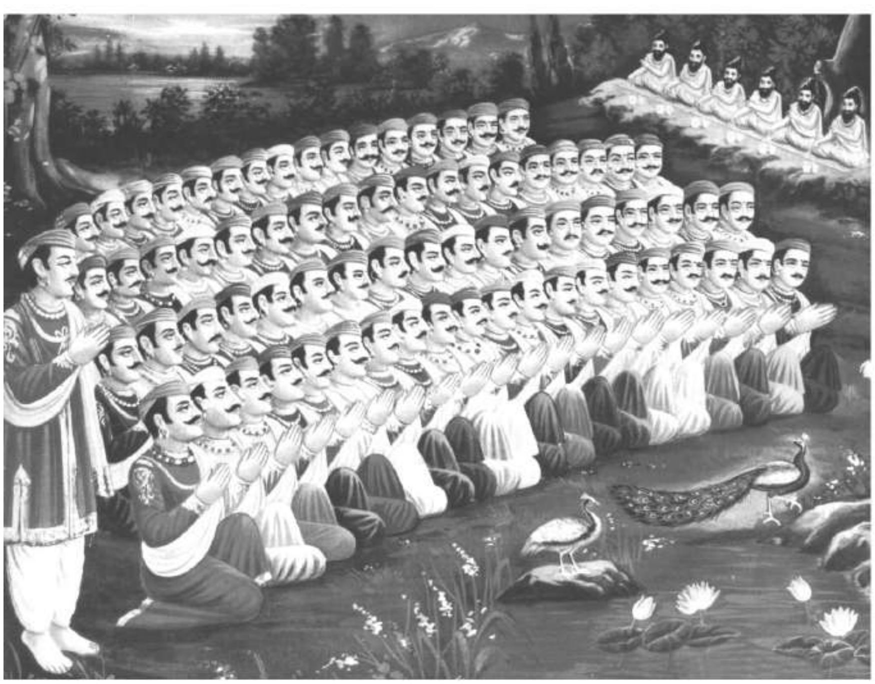

इंजीनियर, मर्चेन्ट, दलाल आदि नामों से पुकारे जाते हैं।

**कोलवार माहेश्वरी-**

सन् 1200 के लगभग माहेश्वरी समाज के 750 परिवार मारवाड़ से युक्त प्रांत चले आये और वहां के कोल नामक स्थान पर जाकर निवास करने लगे। कोल में रहने के कारण ये लोग कोलवार माहेश्वरी के नाम से प्रसिद्ध हुए। ये लोग इतने पुराने समय में इधर आये थे कि उस समय मारवाड़ जाना-आना बहुत ही कठिन और खतरे से भरा हुआ था। अतः इनका मारवाड़ से संबंध टूट गया। तब से आज तक ये कोलवार माहेश्वरी यू.पी. में ही निवास कर रहे हैं।

**देशवाली माहेश्वरी-**

करीब ढाई-तीन सौ वर्ष पहले माहेश्वरी समाज के कुछ घर यू.पी. में आकर बसे और इनका भी मारवाड़ से कोई संबंध न रह सका। ये देशवाली कहलाने लगे।

**बोहरे माहेश्वरी-**

माहेश्वरियों के इस थोक में अक्सर जैसलमेरी माहेश्वरी हैं। ये भी करीब 100-125 वर्ष पहले यू.पी. में आकर निवास करने लगे। इस जाति के लोगों ने यू.पी. में निवेशकर बोहरा गत (देन लेन) का ही व्यवसाय किया, अतएव ये बोहरा माहेश्वरी कहलाये।

**धाकड़ माहेश्वरी-**

गुजरात प्रांत के धाकगढ़ में 20 खांपों के माहेश्वरियों के परिवार आकर बस गये जो आगे जाकर धाकड़ माहेश्वरी नाम से सम्बोधित किये जाने लगे। इनमें आज भी 32 खापें विद्यमान हैं।

**खण्डेलवाल माहेश्वरी-**

ये खण्डेलवाल माहेश्वरी वैष्णव हैं। इनमें कुछ खाँपे तो डीडू माहेश्वरियों की हैं और कुछ गौत्र खण्डेलवालों के मिले हुए हैं। ये लोग खण्डेलवाल माहेश्वरी के नाम से बोले जाते हैं।

इसी प्रकार जेसलमेर में निवास करने वाले जेसलमेरी माहेश्वरी, मेवाड़ के निवासी मेवाड़ी माहेश्वरी, टोंक के निवासी टोंकवाला माहेश्वरी आदि नामों से सम्बोधित किये जाते हैं। ⌶


ज्ञान, कर्म, उपासना की सही समझ और संतुलन पर

व्याख्यान

जीवन प्रबंधन आध्यात्मिक अनुराग के साथ

जितने लोग हैं, उतने प्रश्न। जितने प्रश्न हैं, उतने उत्तर। फिर भी सभी के सामने सही उत्तर, समुचित समाधान का प्रश्न खड़ा है। कारण ज्यादा जोर व्यवहार पर है, स्वभाव पर नहीं। स्वभाव से जीने का अर्थ है अपनी मौलिकता में, मस्ती में जीना। व्यवहार में जीने पर उपलिब्ध में, सांसारिक सुख हैं, पर परिणाम में हैं विलासिता, तनाव, क्रोध और अवसाद। जो स्वभाव से जीते हैं, उनकी उपलब्धि भी सांसारिक सुख हैं, लेकिन परिणाम में शांति, मस्ती और आनंद हैं। स्वभाव से व्यवहार बनाना सुखदायी है, व्यवहार से स्वभाव बनाना दुःखदायी है, यह भी एक प्रबंधन है। आध्यात्मिक अनुराग के साथ मुस्कुराते हुए संपूर्ण जीवन को समुचित प्रबंधन के साथ जीना ही जीवन प्रबंधन है।

*भारतीय संस्कृति के विशाल ग्रंथों की सूची में तीन साहित्य ऐसे हैं, जिनकी समाधि–भाषा में जीवन प्रबंधन के अनेक संकेत हैं।*

श्रीसत्यनारायणव्रतकथा
सत्य के प्रयोग ।
श्रीमद्भगवद्गीता में स्थितप्रज्ञ
कर्म में निष्कामता ।
श्रीहनुमानचालीसा में श्रीआंजनेय
जीवन प्रबंधन के गुरु ।

स्वभाव में जिएं,
संसार में रहें

जीवन प्रबंधन Life Management

आध्यात्मिक अनुराग के साथ With Spiritual Attachment

पं. विजयशंकर मेहता

एक साधक के रूप में आध्यात्मिक अनुराग के आग्रही। रंगकर्म, पत्रकारिता और धर्म के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित नाम। श्री सत्यनारायणव्रत कथा, श्रीमद्भगवद्गीता, श्रीहनुमानचालीसा और श्रीरामचरितमानस पर देश–विदेश में दिए गए सैकड़ों व्याख्यानों में जीवन प्रबंधन पर इनकी मौलिक दृष्टि लोगों को आकर्षित और जिज्ञासुओं को संतुष्ट करती है।

'चित्रकूट'
1 शिवाजी पार्क कालोनी
देवास रोड
उज्जैन–456 010(म.प्र.) भारत

पं. विजयशंकर मेहता
द्वारा लिखित पुस्तक
श्री हनुमान चालीसा
की व्याख्या

जीवन प्रबंधन समूह
Life Management Group

# क्लासिफाइड

## छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

कहते हैं एक से भले दो...
उद्योग-व्यापार में सफलता के लिए माहेश्वरी समाज एकजुट हो, इसके लिए यह हमारा विनम्र प्रयास है। विज्ञापन के इस पृष्ठ के माध्यम से हम माहेश्वरी समाज के उद्यमियों और व्यापारियों को एक दूसरे के करीब लाना चाहते हैं।

## मात्र 250/- रु. में

विज्ञापन देकर आप अपने उद्योग, व्यापार, उत्पाद आदि से पूरे समाज को परिचित करा सकते हैं ताकि हम एक दूसरे की सफलता में सहायक बन सकें। विज्ञापन सामग्री भुगतान चेक या ड्राफ्ट के साथ माह की 20 तारीख तक संपादकीय कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए।
चेक-ड्राफ्ट श्री माहेश्वरी टाईम्स, उज्जैन के नाम देय।

**- संपादक**


**Wanted Marketing Executive All Over India**

COSMO WORLD IS A LEADING TENDER / JOB / AUCTION WEEKLY PUBLISHING 20 JOURNALS ON WEEKLY BASIS FROM PUNE FROM LAST 5 YEAR FOR EXPANSION OF OUR MEDIA HOUSE WE REQUIRE MARKETING EXECUTIVE ALL OVER INDIA.

IF YOU HAVE PASSION FOR WORK & CREATIVE IDEAS WITHIN YOU CONTACT US.

**COSMO WORLD**

Tender/Job Dedicated Bulletin
"Cosmo Bhavan" A-1/7, Bhosale Paradise, Range Hill Road, Pune - 411 020
Tel. : 020-25535607, Mobile : 9823081160
E-mail : cosmo@pn3.vsnl.net.in
Website : www.cosmoworld.com



**घर बैठे ज्योतिष मार्गदर्शन**

जीवन की किसी भी समस्या पर ज्योतिष विषयक अचूक सलाह तथा शास्त्रीय पद्धति से उपासना, उपाय व ग्रह रत्न का मार्गदर्शन। अपनी जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान के साथ अपना प्रश्न लिख भेजें। 100/- का मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट भेजें। घर बैठे उत्तर प्राप्त कीजिए। व्यापारी बन्धु व्यापार वृद्धि के लिए शास्त्रीय पद्धति से संस्कारित श्रीयंत्र, कुबेर यंत्र व कनकधारा यंत्र के लिए सम्पर्क करें।

**चन्द्रशेखर डांगरा**
भंडारे बिल्डिंग, विठ्ठल चौक,
हुपरी - 416203 (कोल्हापुर) महाराष्ट्र
फोन - 0230-2450963, 2452563
मो. 9890940963



राजस्थान में सर्वप्रथम ईकाई

**Mahalaxmi Industries**

Jain Temple Road, OSIA - 342 303
Tel. : 02922-274711 (F) 274712 (R)
94141-00604 (M)

*Quality Maintaine is our Main Motto*



*बालकृष्ण भुतड़ा* मो. 94250-56657
*संजय भुतड़ा* मो. 2341347

**माहेश्वरी हेण्डलूम इण्डस्ट्रीज**

*निर्माता व थोक विक्रेता -*
हेण्डलुम द्वारा अनेक साईजों में
सोफा सेट, कार सीट सेट, आसन, पेरदान, फर्श व फैन्सी लोट कवर, कुशन कवर एवं बेडशीट
दुकान - 82, फ्रीगंज, एम.टी. क्लॉथ मार्केट, इन्दौर (म.प्र.)
निवास - 27, बालाजी विहार, गंगवाल बस स्टेण्ड के पास, इन्दौर (म.प्र.)
दुकान का समय - 2 से 7 बजे तक



आपके परिवार में 'किशोर' युवक-युवती हैं...आप चाहते हैं कि वे सही कैरियर चुनें... नौकर नहीं मालिक बनें तो पढ़े और पढ़ाएं.

**शून्य से शिखर**
भारतीय उद्योगपतियों की यशोगाथा
लेखक - प्रकाश बियाणी

माहेश्वरी बन्धुओं को विशेष रियायत (15 प्रतिशत) के साथ उपलब्ध। संपर्क करें या डाक व्यय सहित 160 रुपये का ड्राफ्ट भेजें-

श्री माहेश्वरी टाईम्स श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.)

माँ कुलदेवी - 3

# आल्हा-उदल को जहाँ वरदान मिला

# श्री धोलेश्वरी माताजी

■ **प्रहलाद मण्डोवरा**, रतलाम

**कुलदेवी श्रृंखला में इस बार प्रस्तुत है-धोलेश्वरी माताजी। माँ धोलागढ़ देवी के नाम से प्रसिद्ध यह दिव्य स्थल तंत्र ज्ञानियों के लिये कामना सिद्धि का पवित्र स्थल माना जाता है। मान्यता अनुसार भावपूर्ण व समर्पित रूप से माँ की आराधना करने पर भक्तों की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। आल्हा-उदल ने भी इसी तपोभूमि में माँ की आराधना व तपस्या कर माँ से विजय श्री का उत्तम वरदान प्राप्त किया था।**

**धोलेश्वरी माताजी मुख्य रुप से बंछास गौत्र व मण्डोवरा खांप की कुलदेवी है।**

माताजी का मंदिर अलवर जिले के अन्तर्गत कठूमर तहसील के छोटे से ग्राम धोलागढ़ में स्थित है। मंदिर एक पहाड़ी पर बना हुआ है जिसे धोल पर्वत के नाम से जाना जाता है। धोलागढ़ ग्राम मेहंदीपुर बालाजी से मात्र 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां पहुँचने के लिए मथुरा, डींग, नारायणा, बियाना, बसेर, धोलागढ़ मार्ग उत्तम है। इस मार्ग की कुल दूरी 90 किलोमीटर है।

माँ धोलेश्वरी धोल पर्वत पर न्यानभिराम मंदिर में विराजित है। मंदिर भूमि तल से लगभग 135 फीट ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ है। मंदिर तक पहुँचाने वाली कुल 163 सीढ़ियाँ अत्यन्त सुगम एवं छायादार है। अरावली के शिखर पर स्थित देवी मंदिर अत्यन्त प्राचीन माना गया है। मंदिर परिसर में पहुँचते ही माँ के चमत्कृत स्वरूप के दिव्य दर्शन होते हैं। माँ की संगमरमरी, तेजस्वी व सौम्य प्रतिमा पूर्वाभिमुख है। मंदिर के वरिष्ठ पुजारी पं. महेश कुमार शर्मा एवं उनके लघु भ्राता पं. हर्षकुमार शर्मा देवी मंदिर में समस्त सुलभ्य संसाधनों के साथ मार्गदर्शनार्थ सदैव उपलब्ध रहते हैं।

मंदिर परिसर शर्मा बन्धुओं की देखरेख में अत्यन्त स्वच्छ, साफ व सौम्य वातावरण युक्त है। मंदिर के पृष्ठ भाग में शीतल जलकुण्ड स्थित है। आस-पास रात्रि विश्राम स्थल व ठहरने, भोजनादि की भी व्यवस्था है। सामान्यतः समस्त सुविधाएं पंडितजी के सरल व्यवहार से सुलभ हो जाती है। वर्तमान पुजारी जी अपने कुल की चौदहवीं पीढ़ी का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

मंदिर प्रांगण में श्री हनुमानजी महाराज का मंदिर व राम-दरबार की छटा भी निराली है। मध्यान्ह 12 से 1 तक मंदिर के पट मंगल रहते हैं। पीढ़ियों से प्रतिनिधित्व प्रदान कर रहे पं. हर्ष कुमारजी शर्मा के अनुसार शक्ति स्वरूपा माँ ने सर्वप्रथम अपने दिव्य दर्शन लक्खी नामक एक बंजारे को प्रदान किए जिसके प्रभाव स्वरूप लक्खी ने इस पहाड़ी पर माँ के मंदिर की स्थापना की और क्षेत्र का प्रमुख शक्ति स्थल बनाया।

आल्हा-उदल ने भी इसी तपोभूमि में माँ की आराधना व तपस्या कर विजयश्री का उत्तम वरदान प्राप्त किया था। शनैः-शनैः दिव्य मूर्ति का चमत्कार निकटवर्ती क्षेत्र के जनमानस में प्रसिद्धि पाने लगा और मंदिर अपना आकार धीरे-धीरे विस्तृत करने लगा। सन् 1971 में मथुरा के चौक बाजार के सुप्रसिद्ध मिष्ठान व्यवसायी "भरतपुरिया मिठाई वाला" के संस्थापक श्री रामचन्द्र जी खण्डेलवाल ने अपनी दानशीलता के आधार पर मंदिर को सुरम्य व सुविधापूर्ण बनाने तथा भव्य स्वरूप प्रदान करने हेतु अनेकों निर्माण कार्य करवाए। मंदिर में चलित हवन कुण्ड की सुलभ व्यवस्था है। मंदिर में लगभग सभी धर्म व जातियों के दर्शनार्थी दर्शन हेतु आते हैं। नवरात्रि में घट स्थापना, अभिषेक, महापूजा, पाठ, हवन आदि निरंतर चलते रहते हैं। कई श्रद्धालु यहां छत्र भी चढ़ाते हैं।

कैसे पहुँचे -

रेल मार्ग द्वारा पश्चिम रेल्वे के हिण्डोन सिटी रेल्वे स्टेशन पहुंचकर यहां से जयपुर-धोलागढ़, हिण्डोन सिटी-धोलागढ़ अथवा उदयपुर-धोलागढ़ जैसी अनेकों राज्य परिवहन की बसों द्वारा सीधे धोलागढ़ पहुँचा जा सकता है।

रेल मार्ग द्वारा भरतपुर पहुँचकर यहाँ से खेरली की रेल सुविधा मिलेगी। वहां से 16 किलोमीटर धोलागढ़ जाने के लिए जीप आदि अन्य साधन आसानी से उपलब्ध हो सकते है।

मथुरा जंक्शन पहुँचकर राज्य परिवहन की बस अथवा स्वयं के निजी वाहन से 90 किलोमीटर दूर धोलागढ़ पहुंचा जा सकता है।

# समाज की प्रत्येक महिला लक्ष्मी और सरस्वती बने-राजश्री बिड़ला

## अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला महोत्सव 'मंथन 2005' सम्पन्न

**अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'मंथन 2005' के उद्घाटन पर्व पर आदित्य विक्रम बिड़ला उद्योग समूह की संचालिका श्रीमती राजश्री बिड़ला ने अपने गरिमामय और सारगर्भित उद्बोधन में समाज की महिलाओं का मार्गदर्शन करते हुए संगठन का भी दिशानिर्देशन किया। इस शुभ अवसर पर उन्होंने 'श्री माहेश्वरी टाईम्स' पत्रिका के सितम्बर-2005 अंक का लोकार्पण किया एवं 'श्री माहेश्वरी टाईम्स' परिवार के सदस्यों को बधाई भी दी।**

### श्रीमती राजश्री बिड़ला ने कहा -

- **'मंथन 2005' में माहेश्वरी महिला संगठन के गत 25 वर्षों की उपलब्धियों का मंथन होगा।**
- **ममता और करूणा के साथ ही धैर्य की भी पहचान है नारी।**
- **समाज की प्रत्येक महिला लक्ष्मी व सरस्वती बने।**
- **माहेश्वरी समाज की महिलाएं लगभग सभी क्षेत्रों में सफलता पूर्वक कार्यरत हैं।**
- **'मंथन 2005' महोत्सव विचार-मंथन की दिशा में संजीवनी का कार्य करेगा।**

## आधुनिक विचार अपनाएं, विकार नहीं

**अकोला।** भारतीय महिला करुणा व धैर्य का प्रतीक है तथा सभी दृष्टि से महान है। यह विचार आदित्य विक्रम बिड़ला ग्रुप की संचालिका व वरिष्ठ समाज सेविका श्रीमती राजश्री बिड़ला ने विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन व माहेश्वरी महिला मंडल, अकोला द्वारा आयोजित अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला महोत्सव के उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्षा श्रीमती गीता मूंदड़ा ने की। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप मे अ.भा. माहेश्वरी महासभा के अध्यक्ष श्री चुन्नीलाल सोमानी कोलकाता, पूर्व अध्यक्ष श्री बंसीलाल राठी चेन्नई, सूरत मधुसुदन ग्रुप के कार्यकारी संचालक श्री गिरधर गोपाल मूंदड़ा, सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती कुसुम माहेश्वरी मुंबई तथा माहेश्वरी समाज ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ.राजीव बियाणी, विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन अध्यक्षा श्रीमती डॉ.तारा माहेश्वरी, माहेश्वरी महिला मंडल अकोला अध्यक्षा श्रीमती उमा भाल, श्रीमती राधादेवी तोषनीवाल, श्रीमती पद्मा मूंदड़ा, श्रीमती मनोरमा लड्ढा, श्रीमती लता लाहोटी, श्रीमती विमला साबू, कमल गांधी, शशिकरण खटोड़ उपस्थित थे।

सर्वप्रथम भगवान महेश जी की प्रतिमा का पूजन व दीप प्रज्वलन श्रीमती राजश्री बिड़ला ने किया। उन्होंने कहा - महिला संगठन सशक्त होना चाहिये। राजनीति, शिक्षा, उद्योग चिकित्सा आदि क्षेत्रों में महिलाओं ने जो प्रगति की है वह देश के विकास के लिये महत्वपूर्ण है। समाज की प्रत्येक महिला लक्ष्मी और सरस्वती का रुप है। आपने पाश्चात्य संस्कृति के पीछे भाग रहे समाज बंधुओं को चेताया और अपनी संस्कृति से जुड़ने का आह्वान किया।

इसके पूर्व श्रीमती राजश्री बिड़ला का स्वागत श्रीमती गीता मूंदड़ा, श्रीमती उमा भाल, डॉ. राजीव बियाणी, श्री दीपक सारड़ा, पूजा मानधना आदि ने किया। प्रमुख अतिथियों का स्वागत राष्ट्रीय संयोजिका श्रीमती लता लाहोटी, श्रीमती विमला साबू, शोभा जाजू, मीना साबू, प्रतिभा चांडक, कल्पना भूतड़ा, शोभा साहाणी, जानकी चांडक, सरोजिनी पनपालिया, कल्पना भूतड़ा, सुनील सोमानी, शोभा हुरकट, मीना सावल, शोभा गट्टानी, तुषार राठी आदि ने किया। विधायक श्री गोवर्धन शर्मा का स्वागत संगीता सारड़ा व विधायक श्री गोपीकिशन बाजोटिया का स्वागत किरण सारड़ा जी ने किया।

इसी प्रसंग पर श्रीमती गीता मूंदड़ा, श्रीमती विमला साबू, श्रीमती लता लाहोटी, श्री बंसीलाल राठी, श्री चुन्नीलाल सोमाणी, श्री कमल गांधी, कुसुम माहेश्वरी, श्री गिरधर गोपाल मूंदड़ा ने भी अपने विचार प्रकट किये।

तीन दिवसीय अ.भा. महिला महोत्सव, 'मंथन 2005' के अवसर पर स्वास्थ्य प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। इस स्वास्थ्य प्रदर्शनी का उदघाटन अकोला जिला पुलिस अधीक्षक लीना श्रीवास्तव द्वारा किया गया। संचालन आशा लड्ढा व उषा बाहेती ने किया। श्रीमती राजश्री बिरला का परिचय सीमा राठी ने दिया।

## भव्य शोभायात्रा से अकोलावासी हतप्रभ

महोत्सव के दूसरे दिन माहेश्वरी महिला मंडल की ओर से भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। शोभायात्रा की भव्यता व सुंदरता ने सभी का मन जीत लिया। अकोलावासियों ने इतनी भव्य व बोधप्रद शोभा यात्रा का अनुभव पहली बार किया। मराठा मंगल कार्यालय से प्रातः 7 बजे शोभायात्रा की शुरुआत हुई। इसमें दिल्ली, हरियाणा, आसाम, बिहार, कोलकाता, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तरप्रदेश,

अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'मंथन-2005' में ऋषिमुनि समूह द्वारा प्रकाशित माहेश्वरी समाज की प्रतिनिधि पत्रिका 'श्री माहेश्वरी टाईम्स' के सितम्बर अंक का लोकार्पण मुख्य अतिथि श्रीमती राजश्री बिड़ला ने किया। इस अवसर पर श्री माहेश्वरी टाईम्स पत्रिका के जलगांव ब्यूरो श्री सुनील माहेश्वरी, इन्दौर ब्यूरो श्री महेश कयाल,महिला मंडल वरिष्ठ पदाधिकारी श्रीमती विमला साबू व श्रीमती गीता मूंदड़ा आदि उपस्थित थे।

उत्तरांचल, आंध्रप्रदेश आदि राज्यों से आई महिला प्रतिनिधियों ने उत्साह से भाग लिया। अभिषेक तोषनीवाल व यामिनी कोठारी द्वारा तैयार शंकर-पार्वती की आकर्षक झांकी सभी को मोहित कर रही थी।

शोभा यात्रा में पूर्व भारत से आई समाज की महिलाओं ने लाल, पश्चिम से आई हुई महिलाओं ने पीली, उत्तर भारतीय महिलाओं ने हरे और दक्षिण से आई हुई महिलाओं ने भगवे रंग की साड़ियाँ पहनी थी। समाज अध्यक्षा श्रीमती गीता मूंदड़ा, विमला साबू, पद्मा मूंदडा, लता लाहोटी, सरला लोहिया, मनोरमा लड्ढा, हैदराबाद के नथमल डालिया, यवतमाल से विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी समाज अध्यक्षा डॉ मधुसुदन मारन, राजीव बियाणी आदि ने भी शोभायात्रा में भाग लिया।

शोभा यात्रा में सुविचार फलक सभी को आकर्षित कर रहे थे। 'आज की बचत कल का सुख', 'बेटी में ढूंढो बहु को, बहु में देखो बेटी', 'यदि न होगा वृक्षारोपण तो सृष्टि का होगा शीघ्र पतन', 'जल के अभाव मे जीवन की रचना असंभव है', 'होते रहे वन वीरान तो मानव का नही बचेगा नामो-निशान', 'संगठन में शक्ति-राष्ट्र की प्रगति' आदि अनेक सुविचारों के फलक थे। शोभा यात्रा का संचालन समिति प्रमुख मनोहर कोठारी व अनिल तापडिया, शांतिलाल भारन, सुभाष चांडक तथा माहेश्वरी प्रगति मंडल, माहेश्वरी नवयुवति मंडल, माहेश्वरी महिला मंडल की डॉ.तारा माहेश्वरी, उमा भाल, उषा बाहेती, इंदुमति मोहता, उमा बाहेती, शशिकरन खटोड़, किरण चांडक, विद्या हेडा, स्नेहा राठी, प्रतिमा चांडक, कल्पना भूतड़ा, ज्योति बाहेती, प्रभा अटल, ज्योत्सना, तापड़िया, सीमा कोठारी, हेमा खटोड़, मनीष भंसाली, सीमा राठी, नीता भंसाली, पद्मा राठी, प्रभा चांडक, चंदा कटुरिया, सरला बागड़ी, किरण चितलाग्या संगीता राठी आदि ने परिश्रम से किया।

## विचारों को समर्पित दूसरा दिन

दूसरे दिन के द्वितीय सत्र में पीढ़ियों का अंतर इस विषय पर तत्वचिंतक ईटा गुरुकुल के प्राचार्य श्री वागीश शर्मा का व्याख्यान हुआ। उन्होंने कहा बच्चों को बचपन में ही अच्छे संस्कार देना माता-पिता की जिम्मेदारी है तथा माता-पिता व बुजुर्गों की सेवा यह युवा पीढ़ी का दायित्व है। प्राचार्य श्री शर्मा का स्वागत अ.भा.मा.म. संगठन अध्यक्षा श्रीमती गीता मूंदड़ा ने पुष्प गुच्छ देकर किया। प्राचार्य श्री शर्मा ने व्याख्यान के प्रारंभ में ही अ.भा.माहेश्वरी महिला मंडल के कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। गत 31 अगस्त से 2 सितंबर तक आयोजित अ.भा.मा.म. महोत्सव मंथन 2005 से नारी शक्ति को नवचेतना मिली है, यह विचार सभी उपस्थित अतिथियों ने व्यक्त किये। तीन दिन में महिलाओं के

विविध, राजकीय, शैक्षणिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, औद्योगिक, पारिवारिक, आरोग्य और अनेक विषयों का मंथन हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती गीता मुंदड़ा व विदर्भ प्रादेशिक अध्यक्षा डॉ.तारा माहेश्वरी ने आभार व्यक्त किया।

संपूर्ण भारत वर्ष से हजारों महिलाओं ने मंथन 2005 में भाग लिया। नारी शक्ति का संगठन कितना आवश्यक है इस पर विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती रुकमणी देवी टावरी (दादीजी) छत्तीसगढ, डॉ रश्मि होलानी भोपाल, मधु लखोटिया, कु. आरती जाजू, जयपुर, कु. परिजा मालु खांमगांव डॉ.नीलू सोमानी, सांसद किरण माहेश्वरी का सम्मान किया गया।

### श्रीमती सविता काबरा
### ''श्रीमती माहेश्वरी''

महिलाओं मे आत्मविश्वास, बौद्धिक विकास, विचार क्षमता वृद्धि हेतु 'श्रीमती माहेश्वरी' कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें श्रीमती माहेश्वरी का प्रथम ताज मुंबई की श्रीमती सविता काबरा, द्वितीय इंदौर की श्रीमती श्वेता सारड़ा व तृतीय छत्तीसगढ़ की अनिता मूंदड़ा ने प्राप्त किया।

### झलकियां-

- महोत्सव के शालीन आयोजन की सभी प्रशंसा कर रहे थे।
- अकोला मे भीषण पानी की कमी होते हुए भी आयोजकों ने अकोलावासियों के पानीदार होने का परिचय दिया।
- कमल गांधी कोलकाता का भाषण आवेशपूर्ण था। उन्होंने कहा प्रताड़ित महिला कोष का निर्माण किया जाना चाहिये जिसकी शुरुआत उन्होंने 5 लाख रु. देकर की।
- समारोह के बाद श्रीमती राजश्री बिड़ला को महिलाओं ने आटोग्रॉफ के लिये घेर लिया।
- हॉल के बाहर भी टीवी पर कार्यक्रम प्रसारित किया जा रहा था जहां सभी पुरुष बैठे थे।
- स्थान-स्थान पर कूलर व पंखो की व्यवस्था की गई थी।
- दीपोत्सव के आयोजन में सभी महिलाएं चुंदड़ी की साड़ियां पहने हुए थी।

# श्रीमती विमला साबू माहेश्वरी महिला संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्षा मनोनीत

## समस्त कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा निर्विरोध समर्थन

महिला महोत्सव 'मंथन 2005' के अवसर पर संयोजिका श्रीमती लता लाहोटी ने अकोला अ.भा. महिला संगठन के अगले सत्र के लिए श्रीमती विमला साबू का नाम अध्यक्षा पद के लिए प्रस्तावित किया जिसका समस्त कार्यकारिणी सदस्यों ने निर्विरोध समर्थन किया। श्रीमती साबू को मिले इस अभूतपूर्व समर्थन ने उनकी अपार लोकप्रियता का परिचय दिया है।

**निरन्तर क्रियाशीलता है उनका परिचय**

रेनवाल निवासी श्रीरामजीदास मारू की सुपुत्री बिमला देवी का जन्म दिनांक 17 सितम्बर 1949 को जयपुर में हुआ। आपका विवाह लोसल निवासी स्व. नन्दलाल साबू के सुपुत्र श्री रामअवतार साबू के साथ हुआ। राजस्थान युनिवर्सिटी से स्नातक श्रीमती बिमला देवी साबू पिछले 20 वर्षों से सामाजिक कार्यों से जुडी हुई हैं। सूरत माहेश्वरी महिला मंडल की आप संस्थापक अध्यक्षा रहीं व सूरत माहेश्वरी समाज में काफी रचनात्मक कार्य किये। आपकी कार्यक्षमता को देखते हुए गुजरात प्रान्तीय माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्षा के रूप में आपका चयन हुआ। इस पद पर 4 वर्ष रहकर आपने स्वाध्याय शिविर, बाल संस्कार शिविर, सामूहिक विवाह आदि आयोजनों के माध्यम से समाज में जागृति हेतु काफी कार्य किये।

आप निरंतर सक्रियता से कार्य करते हुए अखिल भारतीय स्तर तक पहुचीं व सन् 2002 के उदयपुर अधिवेशन में आपका पश्चिमांचल की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में चयन हुआ। अधिवेशन में गुजरात प्रदेश का कार्य सभी प्रदेशों से अच्छा रहा, उसके लिये सम्मानित किया गया। आप गीता परिवार, वन बन्धु परिषद आदि सेवा भावी संस्थाओ से भी जुड़ी हुई हैं व उनमें सक्रिय कार्यकर्ता हैं। बच्चों के संस्कार हेतु कार्य करने में आपकी काफी रूचि है। 4 जनवरी 2004 को इन्दौर में अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन की बैठक में आप राष्ट्रीय महामंत्री के लिये मनोनीत हुई। आपके महामंत्री कार्यकाल मे पश्चिमांचल, पूर्वांचल, उत्तरांचल के आंचलिक सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। माहेश्वरी महिला महोत्सव मन्थन 2005 अकोला में आपको अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन के अध्यक्ष पद के लिए 1 सितम्बर 2005 को मनोनीत किया गया।

# महेश बैंक का 28वाँ स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

**हैदराबाद।** दि ए. पी. महेश को-ऑपरेटिव अर्बन बैंक लि. का 28वाँ स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बैंक के पूर्व पदाधिकारी, निदेशक और प्रबंधकों का सम्मान निदेशक मण्डल ने किया।

बैंक के नव-निर्वाचित चेयरमेन श्री रमेशकुमार बंग ने पूर्ववर्ती निदेशक मण्डलों की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि कोई भी वर्तमान, अतीत को नजर अंदाज कर सुदृढ, सुविकसित और सुरक्षित भविष्य का निर्माण नहीं कर सकता, और जब अतीत विशिष्ठ उपलब्धियों से परिपूर्ण हो तो किसी भी स्थिति में विस्मृत नहीं किया जा सकता। महेश बैंक के विगत 28 वर्षों का गौरवपूर्ण इतिहास आप महानुभावों के अथक परिश्रम और निःस्वार्थ सेवाभाव का साक्षी रहा है और बैंक को विकासोन्मुख दिशा देने के लिये कृत संकल्पित है। उन्होंने उपस्थित सदस्यों से वर्तमान निदेशक मण्डल को आशीर्वाद, प्रोत्साहन और समय-समय पर मार्गदर्शन प्रदान करने की अपील की।

निदेशक मण्डल ने पूर्व निदेशकों और प्रबन्धकों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। निवृत्तमान चेयरमेन श्री बद्रीनारायण राठी ने उपस्थित सदस्यों को

सम्बोधित करते हुए कहा कि महेश बैंक को अंशधारकों ने बहुत ही संतुलित निदेशक मण्डल दिया है जो कि बैंक को प्रगति पथ पर आगे तक ले जाने में सक्षम है, इसके लिये उन्होने सभी अंशधारकों को बधाई दी। निवृत्तमान वाइस चेयरमेन डॉ. आर.एम.साबू ने कहा कि बैंक जिस गति से प्रगति की राह पर अभी तक आगे बढती रही है, उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह टीम इस कसौटी पर खरा उतरेगी।

पूर्व सीनियर वाइस चेयरमेन श्री श्रीगोपाल इन्नाणी ने कहा कि महेश बैंक के अंशधारक, महेश बैंक की अनमोल थाती है, पूर्व निदेशक श्री नथमल डालिया ने भी वर्तमान निदेशक मण्डल को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ दी।

बैंक के पूर्व वाइस चेयरमेन प्रो. श्यामसुन्दर मूंदड़ा ने बैंक के पूर्व चेयरमेन श्री जवाहरलाल राठी की अनुपस्थिति में उनका संदेश पढ़ा। वर्तमान निदेशक श्री सूर्यप्रकाश सारडा ने कहा कि हमें पूर्ण परिपक्वता और समर्पण भाव से कार्य करते हुए बैंक के लिये नवीन लाभकारी अवसरों की खोज करनी होगी।

कार्यक्रम का संचालन महेश बैंक प्रबंध निदेशक श्री आर.एस. जाजू ने किया। बैंक के महाप्रबंधक श्री उमेशचन्द असावा, उप-महाप्रबंधक श्री भगवानदास विजयवर्गीय एवं शाखा प्रबंधकों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। बैंक के वर्तमान सीनियर वाइस चेयरमेन श्री पुरूषोत्तमदास मानधना ने उपस्थित सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

# सोश्यल ग्रुप नागदा का स्थापना दिवस मनाया

**नागदा।** माहेश्वरी सोश्यल ग्रुप द्वारा तीसरा स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर ग्रुप की गत वर्ष की गतिविधियों की जानकारी दी गई। तदानुसार-माहेश्वरी सोश्यल ग्रुप द्वारा श्रावण मास में (21 अगस्त 2004 को) इन्दौर के सुप्रसिद्ध भजन गायक श्री हरिकिशनजी साबू 'भोंपूजी' की भजन संध्या का आयोजन श्री विष्णु शेषशायी बिड़ला मंदिर परिसर में किया गया। भजन संध्या का आयोजन लीक से हटकर किया गया रचनात्मक आयोजन था जिसे सभी धर्म, जाति के लोगों द्वारा सराहा गया।

2 दिसम्बर 2004 बिड़लाग्राम में रात्रि भोज का आयोजन किया गया। इसी कार्यक्रम माहेश्वरी पार्षदगणों का सम्मान एवं सम्मिलित हुए नए सदस्यगणों का स्वागत भी किया गया। 27 फरवरी 2005 को स्वास्थ्य परीक्षण एवं चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन किया गया जिसमें इन्दौर समाज के 11 वरिष्ठ डॉक्टरों के समूह ने अपनी योग्यता एवं अनुभवों का लाभ लेने का अवसर नागदा माहेश्वरी समाज तथा नगरवासियों को प्रदान किया।

15 जुलाई 2005 को गवर्नमेन्ट कालोनी में वृहद पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

**इस स्तम्भ के लिए पाठक अपने क्षेत्र के समाचार भेज सकते है। समाचार संक्षिप्त, तथ्यपरक और सारगर्भित हो। आवश्यक पाए जाने पर ही फोटो प्रकाशित किए जाएंगे।** *-संपादक*

# राठी हास्पिटल में निःशुल्क ओपीडी का शुभारम्भ

**अलीगढ़।** महिला रोगियों को निःशुल्क चिकित्सा परामर्श देने के लिए राठी हास्पिटल में खोले गई ओपीडी का उद्घाटन माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती दर्शन राठी ने फीता काटकर किया। मंडल की मंत्री विनीता राठी ने कहा कि इस प्रकार के प्रयासों से समाज का कल्याण होगा और गरीब व बेसहारा महिला रोगियों को अपना इलाज कराने में कठिनाई नहीं उठानी पड़ेगी।

हास्पिटल की संचालिका डॉ. आशा राठी ने कहा कि हर रोज ओपीडी में प्रातः आठ से दस बजे तक डॉ. दीपा गुप्ता व चारू गुप्ता महिला रोगियों को निःशुल्क परामर्श प्रदान करने हेतु उपस्थित रहेगी।

# बठिण्डा में कजरी तीज त्यौहार की धूम

**बठिण्डा।** माहेश्वरी महिला मण्डल बठिण्डा द्वारा कजरी तीज का त्यौहार धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ बठिण्डा माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती संतोष होलानी व संरक्षिका श्रीमती पूनम राठी द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। इस संगीतमय आयोजन में बठिण्डा के अलावा भुच्चो मण्डी से भी महिला सदस्यों ने भाग लिया। इस समागम में बच्चों ने कविताएं, भजन, गीत व डांस आदि प्रस्तुत किए। महिलाओं ने भी पंजाबी गानों पर खूब धमाल किया।

विशेष रूप से आमंत्रित पंजाब, हरियाणा व जम्मू कश्मीर के प्रादेशिक अध्यक्ष श्री पवन होलानी ने बृन्दावन में पंजाब की गिद्धे की टीम में शामिल ऋचा, राशि, श्रुति, वेनी लखोटिया व प्रेरणा राठी को मोमन्टो प्रदान कर उनका आत्म विश्वास बढ़ाया। श्री ओमप्रकाश कोठारी, श्री ओमप्रकाश होलानी पूर्व अध्यक्ष, प्रेमपाल माहेश्वरी अध्यक्ष, श्री जगदीश मंत्री सचिव व श्री हरीश लखोटिया कोषाध्यक्ष माहेश्वरी सभा बठिण्डा भी इस समागम में शामिल हुए।

मंच संचालन श्रीमती संतोष लखोटिया ने किया। उन्होंने श्री माहेश्वरी टाईम्स के प्रतिनिधि के.के. मालपाणी की नियुक्ति का स्वागत किया।

# श्रीमती माहेश्वरी प्रतियोगिता सम्पन्न

**मन्दसौर।** अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला मण्डल द्वारा प्रायोजित म.प्र. पश्चिमांचल माहेश्वरी महिला मण्डल के निर्देशानुसार, मन्दसौर जिला माहेश्वरी महिला मण्डल एवं मन्दसौर नगर माहेश्वरी महिला मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में स्थानीय माहेश्वरी भवन नयापुरा रोड़ पर "श्रीमती माहेश्वरी" प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रथम - श्रीमती साक्षी राजेश सोमानी, द्वितीय - श्रीमती विजय लक्ष्मी रमेशचन्द्र काबरा, तृतीय - नमिता शरद मंत्री चुनी गई। प्रथम स्थान पर रही श्रीमती साक्षी सोमानी का महू में आयोजित पश्चिमाचंल श्रीमती माहेश्वरी में भाग लेने हेतु चयन किया गया। वहां पर भी श्रीमती सोमानी ने विजेता बनकर आकोला (महा.) में आयोजित अखिल भारतीय श्रीमती माहेश्वरी प्रतियोगिता में भाग लेने की पात्रता हासिल की। प्रतियोगिता की निर्णायक श्रीमती शशि गुप्ता एवं श्रीमती सुधा धाकड़ थी।

# अ.भा. परिचय सम्मेलन 15-16-17 अक्टूबर को इंदौर में

**इन्दौर।** श्री माहेश्वरी विवाह प्रकोष्ठ सेवा ट्रस्ट, इन्दौर द्वारा आगामी 15 से 17 अक्टूबर को त्रि-दिवसीय अष्टदश अ.भा. माहेश्वरी विवाह योग्य युवा परिचय सम्मेलन एवं विशिष्ट प्रत्याशी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री नथमल डालिया, हैदराबाद होंगे।

ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष श्री रामवल्लभ गुप्ता ने बताया कि यह 18 वाँ परिचय सम्मेलन है। ट्रस्ट द्वारा इस बार भी प्राप्त होने वाले बायोडॉटा के सभी प्रत्याशियों के रंगीन फोटो एवं जन्म कुंडली का प्रकाशन परिचय दर्पण विवरणिका में किया जाएगा। गत वर्ष प्रकोष्ठ ने रंगीन फोटो सहित विवरणिका का प्रकाशन प्रारंभ कर एक नई पहल की थी। इस विवरणिका में प्रत्याशी से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी एवं उसका रंगीन फोटो होने से अभिभावकों को बहुत सुगमता हुई।

ट्रस्ट के मंत्री श्री कमलनारायण भुराडिया ने बताया कि इस परिचय सम्मेलन की माहेश्वरी परिवारों को प्रतीक्षा बनी रहती हैं, तथा प्रत्याशी एवं अभिभावकगण प्रत्यक्ष रूप से परिचय सम्मेलन में सम्मिलित होकर विवाह संबंध निश्चित करते हैं। इस बार पंजीयन शुल्क मात्र रु. 350/- तथा आवास एवं भोजन व्यवस्था शुल्क एक इकाई (प्रत्याशी एवं दो अभिभावकों सहित) का शुल्क रु. 350/- रखा गया है। आपने बताया कि स्वागताध्यक्ष श्री गिरधर काबरा होंगे। आयोजन हेतु श्री कल्याणमल मंत्री एवं श्री सत्यनारायण बाहेती को संयोजक तथा श्री दीपक कुईया एवं श्री पंकज सोमानी को सह-संयोजक मनोनीत किया गया है। *सम्पूर्ण जानकारी कार्यालय 253, जवाहर मार्ग (राजमोहल्ला) इन्दौर फोन - 0731-2414328 पर प्राप्त की जा सकती है।*

# श्रीमती सुनीता बाहेती उपाध्यक्ष निर्वाचित

**मन्दसौर।** माहेश्वरी महिला मण्डल महू के तत्वावधान में म.प्र. पश्मिांचल माहेश्वरी महिला मण्डल के चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें मन्दसौर जिले की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती सुनीता के.के. बाहेती उपाध्यक्ष चुनी गई। उन्हें राजेश कासट, आशीष परवाल, जिला महिला मण्डल अध्यक्ष श्रीमती उमा बालदी, सचिव श्रीमती शशि भदादा, नगर अध्यक्ष श्रीमती गीता झंवर, नगर सचिव श्रीमती मणिबाला मालू तथा जिला एवं नगर मन्दसौर महिला मण्डल ने बधाई दी है।

# विधायक श्री रमेश बंग का जलगांव में सत्कार

**जलगांव।** ईस्ट खान्देश एज्यूकेशन सोसायटी द्वारा संचालित आर.आर.लाठी विद्यालय की ओर से राज्य विधान मण्डल के पंचायत राज समिति के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र बंग का सत्कार किया गया।

सभा के अध्यक्ष श्री अरविंद लाठी थे। उपाध्यक्ष श्रीकांत लाठी, सचिव मुकुंद लाठी, स्वतंत्रता सैनिक शांतिलाल राय सोनी, समन्वय समिति अध्यक्ष अनिल लाठी, व्यासपीठ पर उपस्थित थे। संस्थाध्यक्ष श्री अरविंद लाठी ने श्री बंग का सत्कार किया। श्री रमेश बंग के द्वारा सरस्वती पूजन किया गया। संस्था के कार्य का गौरव कर के इक्कीसवीं सदी के अनुरूप शिक्षा क्षेत्र का विस्तार किये जाने पर बंग ने जोर दिया। इस कार्य के लिये योगदान का आश्वासन भी उन्होनें दिया।

श्री बंग जी ने जलगांव मर्चेन्ट को भी सदिच्छा भेंट दी जहां पर हरनारायण जी राठी बैंक के संस्थापक अध्यक्ष इन्होंने श्री बंगजी का स्वागत किया। इस मौके पर संचालक अशोक राठी, लखीचंद झंवर, प्राचार्य श्यामकांत देशपांडे, रमेश जाजू, अशोक धूत, मदन लाहोटी, श्री भदादे, जयश्री बियाणी, एस.आर.मणियार, संजय लड्ढा, श्याम बियाणी, शिववल्लभ राठी आदि उपस्थित थे।

# अच्छी वर्षा के लिए इन्द्र महायज्ञ किया

**बस्सी ( चित्तौड़गढ )।** इन्द्रदेव को प्रसन्न कर अच्छी वर्षा हेतु श्री लक्ष्मीनारायण सत्संग भवन में तीन दिवसीय इन्द्र महायज्ञ का आयोजन किया गया।

यज्ञ में 8 विद्वत पंडितों ने मंत्रोच्चार के साथ हवनात्मक यज्ञ करवाया। यज्ञ में मुख्य यजमान श्री कालूराम सोनी थे।

जन्माष्टमी के पावन पर्व पर सोनिया के चौक मे मटकी फोड़ कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें विजय पार्टी को श्री कालूराम सोनी ने नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर समाज के गणमान्यजन एवं समस्त माहेश्वरीजन उपस्थित थे।

# काबरा अध्यक्ष व सोमानी सचिव निर्वाचित

**राजसमंद।** श्री महेश प्रगति संस्थान राजसमंद की साधारण सभा एवं सिन्जारे की गोठ का आयोजन स्थानीय रामेश्वर महादेव मन्दिर में किया गया। इस अवसर पर श्री गोविन्द नारायण अजमेरा निर्वाचन अधिकारी के सानिध्य में संस्थान के द्विवार्षिक चुनाव वर्ष 2005-07 भी सम्पन्न हुए। जिसमें श्री सत्यप्रकाश काबरा अध्यक्ष, श्री कमलेश बल्दवा व श्री हरि भगवान बंग उपाध्यक्ष, राम गोपाल सोमानी सचिव, श्री लक्ष्मीलाल ईनानी सह-सचिव व चतुर्भुज गट्टाणी को निर्विरोध कोषाध्यक्ष चुना गया। नव निर्वाचित अध्यक्ष को सर्व सम्मति से अधिकार दिया गया कि संस्थान के श्री महेश महिला प्रगति संस्थान एवं महेश प्रगति युवा मंच का गठन अपनी कार्यकारिणी की घोषणा करें। चुनाव के पहले निवृत्तमान अध्यक्ष श्री रामचन्द्र झंवर ने विगत दो वर्षों के कार्यकाल का एवं कोषाध्यक्ष श्री कमल धूत ने आय-व्यय का ब्योरा प्रस्तुत किया। आभार सचिव भगवतीलाल असावा ने माना।

# पिपलिया मंडी नवयुवक मंडल की कार्यकारिणी गठित

अध्यक्ष

सचिव

**पिपलिया मंडी।** माहेश्वरी समाज पिपलिया मंडी के तत्वाधान में नवयुवक मंडल की नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया। समाज के वरिष्ठगणों व अध्यक्ष श्री सत्यनारायण मंत्री की उपस्थिति में निर्विरोध चुनाव सम्पन्न करवाए गये जिसमें संरक्षक पद पर डॉ. अरूण मूंदड़ा व अध्यक्ष पद पर सर्वश्री मनोज चाण्डक (मावा), सचिव राकेश बाहेती, उपाध्यक्ष राकेश काबरा, सह सचिव राजेश मालपानी, कोषाध्यक्ष नटवर मुंदडा, संगठन मंत्री मुकेश डांगरा, प्रचार मंत्री नागेश राठी को मनोनीत किया गया। कार्यकारी सदस्य-सुनील मूंदड़ा (छोटु), पवन मूंदड़ा, गंगासागर बिसानी, दीपक डांगरा, अमित मालपानी, अशोक डांगरा, गोपाल मूंदड़ा, गोपाल डांगरा, पंकज मूंदड़ा, अविनाश मंत्री आदि मनोनीत किए गए। माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा विशाल मटकी फोड़ स्पर्धा का आयोजन रखा गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में समस्त संगठन के सदस्य एवं समाज के वरिष्ठों द्वारा विशेष सहयोग प्रदान किया गया।

# पचोर माहेश्वरी समाज के चुनाव सम्पन्न

**पचोर।** माहेश्वरी समाज पचोर के तत्वावधान में चुनाव हेतु बैठक का आयोजन किया गया बैठक की अध्यक्षता अध्यक्ष श्री बिशनदास राठी ने की। इस चुनाव में नगर माहेश्वरी सभा अध्यक्ष पद पर रमेश परतानी, उपाध्यक्ष विनोद राठी, सचिव विष्णू प्रसाद गट्टानी, कोषाध्यक्ष जगदीश बाहेती एवं सहसचिव पद पर कमलेश कारया निर्विरोध निर्वाचित घोषित किये गये। साथ ही जिला प्रतिनिधि हेतु श्री कालूराम काकाणी, श्री कृष्णदास राठी का चयन किया गया।

नगर कार्यकारिणी मार्गदर्शन मंडल में उक्त पदाधिकारियों सहित उदित नारायण काकानी, ब्रजभूषण बागड़ी, राधेश्याम छापरवाल, जगदीश राठी व रमेशचन्द्र अजमेरा का मनोनयन किया गया। नगर के युवा संगठन हेतु अध्यक्ष राधेश्याम बाहेती, उपाध्यक्ष दिनेश काकानी, सचिव संजय भट्टर, कोषाध्यक्ष बाबूलाल काकानी एवं नवनीत माहेश्वरी सह सचिव, महेश काकानी, रिपुदमन माहेश्वरी जिला प्रतिनिधि चुने गये। म.प्र. पश्चिमांचल उपाध्यक्ष कालूराम काकानी, जिला अध्यक्ष डा. हृदय नारायण माहेश्वरी, पूर्व महामंत्री रामप्रसाद गगरानी, उपाध्यक्ष विट्ठलदास मूंदड़ा, कोषाध्यक्ष लक्ष्मीचन्द्र विहानी, पूर्व शाजापुर जिला माहेश्वरी सभा अध्यक्ष इन्दरमल खटोड़ सहित अनेक समाज बन्धुओं ने हार्दिक बधाई दी।

# चुनाव सम्पन्न

अध्यक्ष

सचिव

**खण्डवा।** खण्डवा माहेश्वरी समाज की साधारण सभा में श्री माहेश्वरी मण्डल खण्डवा के चुनाव श्री चम्पालाल गांधी के निर्देशन में निर्विरोध सम्पन्न हुए जिसमें श्री रामचंद्र बाहेती पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए साथ ही सचिव पद पर श्री विजय राठी चुने गए। अन्य पदाधिकारियों में उपाध्यक्ष किशन गोपाल मूंदड़ा, सह सचिव गोपाल बाहेती, संगठन मंत्री मनोज झंवर तथा कोषाध्यक्ष शिवकरण धूत चुने गए। कार्यकारिणी सदस्यों मे द्वारकादास काबरा, मोहनलाल झंवर, नारायणदास काकाणी, प्रकाशचंद भदादा, कृष्णकांत हेड़ा, बालकिशन मालानी, दीपक धूत, केदार कचोलिया, पंकज राठी व योगेश गांधी चुने गए। सभी पदाधिकारियों को प्रकाशचंद्र बाहेती, अनिल बाहेती, सोहनलाल काबरा, गोविंद सोमानी, सुभाषचन्द्र सोनी एवं सभी समाज बंधुओं ने बधाई दी।

# महिला संगठन अलीगढ़ द्वारा नंद उत्सव का आयोजन

**अलीगढ़।** माहेश्वरी महिला संगठन अलीगढ़ द्वारा दिनांक 28 अगस्त 05, रविवार को स्थानीय श्री माहेश्वरी बाल मंदिर मदारगेट में नंद उत्सव का आयोजन किया गया। संगठन की वर्तमान अध्यक्षा श्रीमती दर्शन राठी एवं पूर्व अध्यक्षा श्रीमती सुशीला झंवर ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसके पश्चात सभी सदस्यों ने महेश वंदना की। तदुपरान्त मनभावन झांकियों के दौरान भगवान श्रीकृष्ण का जन्म, उन्हें मथुरा से गोकुल पहुंचाना, भगवान महेश द्वारा भगवान कृष्ण के दर्शन प्रदर्शित किए गए।

इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे त्वरित भाषण प्रतियोगिता, कार्टून प्रतियोगिता, लोकनृत्य प्रतियोगिता, फेन्सीड्रेस प्रतियोगिता, ज्ञान प्रतियोगिता आदि का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में कोषाध्यक्ष श्री उषा गोदानी द्वारा पूर्व कोषाध्यक्षा श्रीमती प्रेमवती बाला को, अध्यक्षा श्री दर्शन राठी द्वारा पूर्व अध्यक्षा श्रीमती सुशीला झंवर को भी सम्मानित किया गया। सचिव श्रीमती विनीता राठी द्वारा शिविर में भाग लेने वाली उन सभी बालिकाओं एवं महिलाओं को सम्मानित किया गया जिन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली बालिकाओं को निःशुल्क प्रशिक्षित किया।

# अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला संगठन का प्रांतीय अधिवेशन जलगांव में

**जलगांव।** अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला संगठन द्वारा जलगांव में आगामी 22-24 अक्टूबर के मध्य प्रांतीय अधिवेशन तथा मारवाड़ी महिला शिविर का आयोजन किया जा रहा है। दिनांक 22 अक्टूबर को प्रातः 9 बजे राज्य स्तरीय शिविर का उद्घाटन स्थानीय यश प्लाजा में होगा। इस अवसर पर समाज के राष्ट्रीय स्तर के पदाधिकारीयों की उपस्थिति भी रहेगी। उद्घाटन समारोह के पश्चात मेहंदी, चित्रकला आदि विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है।

द्वितीय सत्र में 'आज की शिक्षित महिला सुसंस्कृत है या नहीं' और 'स्त्री-पुरूष समानता समाज के हित की है या नहीं' इन विषयों पर वाद-विवाद स्पर्धा का आयोजन किया गया है। 23 अक्टूबर को महिला महोत्सव की शुरुआत होगी। सभी में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। 24 अक्टूबर को शिविर का समापन होगा।

# माहेश्वरी फ्रेन्ड्स ग्रुप का रक्तदान शिविर सम्पन्न

**जलगांव।** जलगांव माहेश्वरी फ्रेण्ड्स ग्रुप व इण्डियन रेडक्रॉस सोसायटी के संयुक्त तत्त्वावधान में स्व. श्री नंदलाल अटल की स्मृति में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ डॉ. दीपक अटल व डॉ. ममता चाण्डक ने किया। शिविर में अधिकाधिक माहेश्वरी बन्धुओं ने रक्तदान कर सामाजिक एकता का परिचय दिया व शिविर को सफल बनाया। माहेश्वरी फ्रेण्ड्स ग्रुप द्वारा रक्तदाताओं को प्रमाण-पत्र व कार्ड का भी वितरण किया गया। कार्यक्रम को समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने उपस्थिति देकर सराहा। शिविर में डॉ. जगदीश लड्ढा, संदीप बेहडे, प्रकाश कुमार राठी, प्रवीण लड्ढा, राजेश आगीवाल, श्रीनिवास कलंत्री, अमोल बियाणी, निलेश काबरा, पवन राठी, प्रवीण लाठी, दिलीप आगीवाल, श्रीराम बियाणी, ईश्वर लाठी, अरूण गांधी, दिलीप झंवर, रिंग रोड, गणेश कालोनी झोन प्रमुख सदस्य अविनाश जाखेटे, पवन लाठी व अनेक पदाधिकारी उपस्थित थे। समाज भूषण मोतीलाल दहाड, संजीव बिड़ला डॉ. नवाल, डॉ. भूषण झंवर, शिरीष नवाल, स्वातंत्रता संग्राम सैनानी शांतिलाल राय सोनी ने भी भाग लिया।

# बछबारस पर्व मनाया

**मनासा।** श्री माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा बछबारस पर्व पर 12 गोरध लगाये गए। महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती शकुंतला झंवर, सचिव श्रीमती गिरीजा मुंगड़ उपाध्यक्ष श्रीमती सुनिता, कोषाध्यक्ष श्रीमती कृष्णा मंत्री ने जानकारी देते हुए बताया कि मनासा महिला मंडल पिछले करीब 10 वर्षों से बछबारस और ऋषि पंचमी आदि त्योहारों पर सहकारी भावना से गोरध का आयोजन करता आ रहा है।

## श्री समदानी व्यापारी संघ मनासा के अध्यक्ष निर्वाचित

**मनासा।** व्यापारी संघ मनासा के अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से श्री ब्रजमोहन समदानी को चुना गया। श्री समदानी इसके पूर्व भी लगातार 2 वर्षों से संघ के अध्यक्ष पर रहकर अपनी सेवाएं दे चुके है। इसके अतिरिक्त श्री समदानी माहेश्वरी जिला कार्यकारिणी के सदस्य एवं नारायण सेवा संस्थान शाखा मनासा के सदस्य भी है। इस अवसर पर सर्वश्री घनश्याम मूंदड़ा, प्रकाश झंवर, गोपाल सारड़ा, सत्यनारायण सारड़ा, श्यामसुन्दर समदानी (मुम्बई), नंदकिशोर समदानी, राजेश सारड़ा, जगदीश तोषनीवाल, बाबुभाई मूंदड़ा, दिलीप मालपानी, मनोहर सोढ़ानी, वरदीचंद बाहेती, बद्रीलाल कासट, रामरस मंत्री, मनोज झंवर (बसंत), सुरेश लाठी, रामगोपाल मंत्री (मनीष), लिटील सारड़ा, भगवान मालानी एवं अन्य समाज बन्धुओं ने शुभकामनाएं दी।

## श्री गगरानी पुनः जिलाध्यक्ष

जिलाध्यक्ष

**नीमच।** जिला माहेश्वरी सभा की बैठक डीकेन में संपन्न हुई, जिसमें नीमच, मनासा, जावद के करीब सौ प्रतिनिधि उपस्थित थे। बैठक में जिला माहेश्वरी सभा द्वारा पूर्व कार्यकाल का आय-व्यय लेखा प्रस्तुत किया गया। इन्दौर से पश्चिमांचल के मानद सचिव ईश्वर बाहेती एवं बंशीलाल भूतड़ा (किरण) विशेष तौर पर उपस्थित थे। निर्वाचन अधिकारी के रुप में श्री भगवान दास मुच्छाल जावद एवं पर्यवेक्षक के रुप में पश्चिमांचल के उपाध्यक्ष श्री रामेश्वर मारु उपस्थित थे। बैठक में सर्वसम्मति से श्री सत्यनारायण गगरानी नीमच को जिलाध्यक्ष के रुप में पुनः निर्वाचित घोषित किया गया। शेष पदाधिकारियों का नामांकन अध्यक्ष के विवेकाधिकार पर रखा गया है। आभार श्री जगदीश मुंदड़ा (डीकेन) ने व्यक्त किया।

## जलगांव महिला मण्डल द्वारा श्रावण गीत स्पर्धा सम्पन्न

**जलगांव।** माहेश्वरी महिला मण्डल जलगांव द्वारा आयोजित जिला स्तरीय श्रावण गीत स्पर्धा में जिले भर से 15 माहेश्वरी मण्डलों ने भाग लिया। कार्यक्रम का प्रारंभ मण्डल अध्यक्षा श्रीमती संतोष नवाल व प्रयोजक आशा तोषनीवाल द्वारा भगवान महेश की पूजा-अर्चना कर किया गया। महेश वन्दन नृत्य नेहा भूतड़ा व राधिका काबरा द्वारा प्रस्तुत किया गया।

सावन गीत स्पर्धा में एरेडोल राजस्थानी मण्डल को प्रथम पारितोषिक मिला द्वितीय स्थान पर सखी मण्डल, जलगांव व तृतीय पारितोषिक चोपड़ा माहेश्वरी मण्डल को उत्तेजनार्थ पुरस्कार भुसावल महिला मण्डल, गणगौर मण्डल को दिया गया। परिक्षक के तौर पर प्रमिला चांडक उपस्थित थी। परिचय सुमती नवाल और आभार मिनाक्षी झंवर ने किया।

## माहेश्वरी समाज जयपुर के चुनाव निर्विरोध सम्पन्न

अध्यक्ष

मुख्यमंत्री

**जयपुर।** माहेश्वरी समाज जयपुर के सत्र 2005-08 के लिए त्रैवार्षिक चुनाव लगभग 22 वर्ष पश्चात निर्विरोध सम्पन्न हुए। जिसमें सर्वश्री रामस्वरूप कोठ्यारी अध्यक्ष, राधेश्याम परवाल उपाध्यक्ष, गिरिराज प्रसाद उपाध्यक्ष, बजरंगलाल जाखेटिया उपाध्यक्ष, सुभाष सिंगी मुख्यमंत्री, सत्यनारायण तोतला संयुक्त मंत्री, सत्यनारायण काबरा संयुक्त मंत्री तथा रामअवतार अजमेरा शिक्षा मंत्री भवन मंत्री महेश भुराडिया, कमल किशोर साबू, सत्यनारायण काबरा, सत्यनारायण काबारा (श्रीमा.), सांस्कृतिक मंत्री महेश परवाल पद पर नियुक्त किए गए।

## श्री राठी ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष

**ओसियां।** "श्री भगवान राठी को ओसियां ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद पर निर्विरोध चुना गया। आप पूर्व में ओसियां सरपंच, जिला युवा अध्यक्ष पद पर रह चुके हैं। वर्तमान में आप अ.भा.माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर के कार्यकारिणी सदस्य है। आप कई अन्य संस्थाओं से जुड़े सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

## काशीनाथ पलोड़ पब्लिक स्कूल के बच्चों का निवासी शिविर

**जलगांव।** विवेकानंद प्रतिष्ठान संचालित काशीनाथ पलोड़ पबल्कि स्कूल की ओर से पांचवीं व छठी कक्षा के बच्चों के लिये निवासी शिविर लगाया गया। योगासन, कवायत, घुड़सवारी अनेक तरह के मैदानी खेल आदि का प्रशिक्षण बच्चों को दिया गया। पर्यावरण, स्वयंशिस्त, व्यक्तित्व विकास इस विषय पर भी बच्चों को समझाया गया। पांच दिवसीय शिविर में बच्चों की सारी व्यवस्था स्कूल में ही की गई।

जिले में इस तरह का प्रयोग पहली बार करने का श्रेय भी काशीनाथ पलोड़ पब्लिक स्कूल के प्राचार्य सतीष मोरे व सभी शिक्षकों के परिश्रम से सफल हुआ।

## श्री चारभुजा पैदलयात्रा सम्पन्न

**मनासा।** समाज बंधुओं ने चारभुजाजी की 11 वीं पैदल यात्रा का भरपूर आनंद लिया। यह यात्रा मनासा से प्रारंभ होकर भादवा माताजी, नीमच, निम्बाहेड़ा, सांवलिया जी, फतेहनगर, नाथद्वारा, कांकरोली होते हुए प्रसादी कर वापसी मनासा पहुंची। यह यात्रा संघ प्रतिदिन 30 किलोमीटर की पैदल यात्रा पूरी करता था। जिसमें माहेश्वरी समाज के उमेश मुंगड़, आशिष मुंगड़, नवनीत तोषनीवाल, अंकुश सोढ़ानी, गोविन्द बसेर, लोकेन्द्र झंवर, दिलीप कासट, पंकज, दीपक बसेर, संजय, महेश काबरा, सत्यनारायण झंवर एवं अन्य समाज बंधुओं ने भाग लिया।

# सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बीच मनाया गया झूला उत्सव

**लखनऊ।** ट्रान्सगोमती माहेश्वरी महिला संगठन लखनऊ द्वारा विगत दिनों 23.08.05 को विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन मंगलम सत्संग भवन निराला नगर में झूला उत्सव एवम् तीज पर्व पर किया गया। विशेष रूप से सुहागिनों के लिये आयोजित इस उत्सव में रंग-बिरंगे परिधानों में सजी सोलह श्रृंगार किये समाज की करीब 150 महिलाओं ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम की शुरूआत गणेश वन्दना एवम् शिव स्तुति से हुई। संगठन की अध्यक्षा श्रीमती ऊषा झंवर द्वारा सभी महिलाओं का स्वागत करने के उपरान्त समूहगान कार्यक्रम श्रीमती स्वाती सोमानी, ममता राठी, विना एवम् राजश्री सोनी द्वारा प्रस्तुत किये गये। सामूहिक नृत्य कार्यक्रम में कु. तुषिता राठी, राशी, नेहा, नूतन एवम् प्रीती राठी ने भाग लिया एवम् डॉडिया नृत्य में श्रीमती प्रीती राठी, राधा राठी, पायल राठी, विनती माहेश्वरी, नीरू माहेश्वरी एवम् ऋतु माहेश्वरी ने अद्‌भुत नृत्य पेश किये।

# खंडवा जिला माहेश्वरी महिला संगठन के चुनाव संपन्न

**खंडवा-** जिला माहेश्वरी महिला संगठन के चुनाव सर्वानुमति से संपन्न हुआ। चुनाव में श्रीमती अरुणा बाहेती अध्यक्ष, निर्मला काबरा सचिव, उपाध्यक्ष सुश्री पुष्पा राठी एवं किरण मंत्री चुने गए। इसी प्रकार कोषाध्यक्ष श्रीमती कमला भदादा, संगठन मंत्री अलका अजमेरा (पुनासा), सह सचिव मनीषा गांधी का चयन किया गया। कार्यकारिणी सदस्यों में श्रीमती उषा परवाल, वीणा भदादा, किरण बाहेती, लता राठी, मंजु काबरा, वीणा माहेश्वरी, प्रेमा हुरकट, निर्मला पलौड़ (निमाड़खेड़ी), संगीता बाहेती (पुनासा) व श्रीमती विमला सोनी (छनेरा) चुने गए।

# पदभार ग्रहण एवं सम्मान समारोह सम्पन्न

**धार।** जिला माहेश्वरी समाज के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री महेशचन्द्र माहेश्वरी एवं उनके द्वारा गठित कार्यकारिणी का पदभार ग्रहण जैन धर्मशाला माण्डव में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि म.प्र. पश्चिमांचल माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष श्री रंगनाथ न्याती, अध्यक्ष श्री मदनलाल पलौड़ एवं विशेष अतिथि श्री बंशीलाल भूतड़ा (किरण) थे।

कार्यक्रम की शुरूआत भगवान महेश के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलित कर की गई। स्वागत भाषण वरिष्ठ समाजसेवी श्री लक्ष्मीनारायण परवाल द्वारा दिया गया तत्पश्चात नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री महेशचन्द्र माहेश्वरी द्वारा अतिथियों को शाल एवं श्रीफल से सम्मानि किया गया।

उक्त कार्यक्रम में धार जिले के माहेश्वरी समाज के समस्त बन्धुओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री जगदीश मूंदड़ा द्वारा किया गया एवं आभार श्री कृष्णकांत सोमानी ने माना।

# खण्डवा जिला माहेश्वरी संगठन के चुनाव सम्पन्न

अध्यक्ष

सचिव

**खण्डवा।** गत दिनों श्री चम्पालालजी गाँधी के निर्देशन में खण्डवा जिला माहेश्वरी संगठन के चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें सोहनलाल काबरा अध्यक्ष, नारायण बाहेती सचिव सर्वानुमति से चुने गये। अन्य पदाधिकारियों में उपाध्यक्ष दिनेश बाहेती पुनासा, द्वितीय उपाध्यक्ष भगवानदास मंत्री खण्डवा, सहसचिव राजेश जेथलिया, कोषाध्यक्ष गोविन्द राठी, संगठन मंत्री ईश्वरदास राठी चुने गये। कार्यकारिणी सदस्यों में सुभाषचंद सोनी, राजनारायण परवाल, गोविन्द सोमानी, राजकुमार राठी, कृष्णदास हुरकट, शरद राठी व संजय पलोड़, केदार जी पलोड़ निमाड़खेड़ी, सीताराम सोनी छनेरा, रमेश अजमेरा पुनासा चुने गये। अ.भा. प्रतिनिधि के लिये श्री प्रकाशचन्द बाहेती पुनः चुने गये।सभी चुने गये पदाधिकारियों को समाज बन्धुओं ने बधाई प्रेषित की।

## श्री माहेश्वरी समाज मन्दसौर के चुनाव सम्पन्न

**मन्दसौर।** श्री चारभुजानाथ माहेश्वरी पंच (माहेश्वरी समाज) मन्दसौर के एतिहासिक चुनाव लगभग 20 वर्षो के अन्तराल में माहेश्वरी सम्पन्न हुए। समाज के 18 ट्रस्टियों के निर्वाचन के लिये समाज के प्रत्येक परिवार प्रमुख ने पहली बार अपने मताधिकार का उपयोग कर किया। जिसमें निम्न ट्रस्टी निर्वाचित हुए। सर्वश्री रामानुजदास मंत्री, बापूलाल गगरानी, रामेश्वरलाल काबरा, जगदीशजी काबरा, सत्यनारायण सोमानी, मदनलाल धूत, रमेशचन्द्र चिचानी, जगदीश चन्दु छापरवाल, हरीवल्लभ मण्डोवरा, राधेश्याम झंवर, सुरेश सोमानी, विश्वानाथ सोमानी, रमेशचन्द्र सोढ़ानी, गोपाल पसारी, मनोहरजी सोमानी, राजेश कासट, राजेन्द्र हेड़ा, श्री महेश सोमानी।

## श्री माहेश्वरी युवा मंडल ने गणेशोत्सव मनाया

**खंडवा।** श्री माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा गणेश उत्सव का आयोजन किया गया। उत्सव के दौरान गणेशजी की आकर्षक मूर्ति की स्थापना की गई तथा दस दिवसीय कार्यक्रमों का आयोजन सत्यनारायण मंदिर मे किया गया। युवा मंडल के मनीष काबरा ने बताया उत्सव के पहले दिन 7 सितम्बर को स्थापना समारोह मनाया गया और प्रतिदिन प्रातः एवं संध्या आरती का आयोजन भी किया गया। वहीं दूसरे दिन बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता व युवतियों एवं महिलाओं के लिए मेंहदी प्रतियोगिता रखी गई। उन्होंने बताया 11 सितम्बर को वेस्ट ऑफ द वेस्ट। 15 सितम्बर को घर पर झाँकी सजाना प्रतियोगिता आयोजित की गई। 16 सितम्बर को पुरस्कार वितरण एवं लक्की ड्रा निकाला गया। उत्सव के अंतिम दिन 17 सितम्बर को गणपति विसर्जन किया गया। इसमें माहेश्वरी परिवार के सभी सदस्यों, महिलाओं और बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

## श्री राठी पटना में सीएसपी

**पटना।** श्री राकेश कुमार राठी पटना में सीएसपी नियुक्त हुए हैं। आपने 2002 वर्ष मे **CIVIL SERVICES** की परीक्षा में सफल होकर **IPS BIHAR CADRE** प्राप्त किया। बिहार के रोहतास जिले में **IPS** की **TRAINNING** ली तथा पहली बार **SDPO CUM ASP** औरंगाबाद बिहार बने। वर्तमान में आप पटना में सीएसपी. पद को सुशोभित कर रहें हैं। इनकी आरंभिक शिक्षा-दीक्षा कोलकाता में ही हुई। विवाहित 28 वर्षीय श्री राठी समाज के प्रति समर्पित हैं। मिलनसार, व्यवहार कुशल एवं कर्मठ

## सुमित माहेश्वरी

**पटना।** श्री शंकर लखोटिया एवं श्रीमती शशि लखोटिया के सुपुत्र श्री सुमित माहेश्वरी 2005 की **C.A.** की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। श्री एवं श्रीमती लखोटिया समाज के सक्रिय कार्यकर्ता हैं। श्री लखोटिया अभी गुड़गाँव में **MULTINATIONAL** कम्पनी में वरिष्ठ वित्तिय सलाहकार पद पर कार्यरत हैं। श्री सुमित माहेश्वरी को उनकी इस उपलब्धि पर ''श्री माहेश्वरी टाईम्स'' परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

## श्री रमेशचन्द्र माहेश्वरी सम्मानित

**अजमेर (राज.)।** श्री रमेशचन्द्र माहेश्वरी (सोनी) सदस्य, अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा व संयुक्त मंत्री, राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा को शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट व उल्लेखनीय योगदान के लिए जिला प्रशासन द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2005 को राज्य के सिंचाई व जनस्वास्थ मंत्री प्रो. साँवरलाल जाट के हाथों प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर नगर व समाज के प्रतिष्ठित बन्धुओं द्वारा भी उनका अभिनन्दन किया गया। माहेश्वरी पब्लिक स्कूल अजमेर, माहेश्वरी इन्टरनेशनल पब्लिक स्कूल मदनगंज-किशनगढ व अजमेर के आप संस्थापक और प्रेरणास्रोत रहे हैं तथा ''दी संस्कृति पब्लिक स्कूल'' अजमेर की स्थापना में भी आपकी सक्रिय भूमिका रही है।

## प्रमोद चाण्डक

**नलखेड़ा।** जिला नीमच निवासी श्री विनोद चाण्डक व श्रीमती माया चाण्डक के सुपुत्र प्रमोद चाण्डक ने शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नलखेड़ा द्वारा आयोजित कक्षा 8 वीं की परीक्षा में 81 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है व बधाई प्रेषित करता है।

## श्री कविश माहेश्वरी को सुयश

**भोपाल।** विगत दिनों भोपाल संभागीय शतरंज प्रतियोगिता में श्री कविश माहेश्वरी (गोदानी) जिला स्तर पर द्वितीय रेंक संभागीय स्तर पर 5 वीं रेंक एव प्रदेश स्तर पर 10 वीं रेंक पर विजयी हुए आप श्री गोपालजी माहेश्वरी (गोदानी) के चिरंजीव है।

## श्री महेश पलौड़ अ.भा. वैश्य महासम्मेलन के संभागीय महामंत्री मनोनीत

उज्जैन। अ.भा. वैश्य महासम्मेलन के प्रादेशिक अध्यक्ष श्री नारायणप्रसाद गुप्ता (पूर्व सांसद) द्वारा उज्जैन का श्री महेश पलौड़ को संभाग का महामंत्री मनोनीत किया गया।

श्री महेश पलौड़ को संभागीय पदाधिकारी बनने पर श्री रामरतन लड्ढा, श्री ओमप्रकाश राठी, माहेश्वरी मेवाड़ा थोक पंचायत अध्यक्ष श्री श्यामसुन्दर भूतड़ा, ट्रस्ट अध्यक्ष श्री गजानंद मुंदडा, श्री नरसिंह देवपुरा, श्री राजेश माहेश्वरी, श्री राजेन्द्र साबू, श्री श्याम माहेश्वरी ने बधाई दी।

## श्री विमल किशोर मूंदड़ा को केमिकल रत्न अवार्ड

**नागदा।** ग्रेसिम इंडस्ट्रीज लिमिटेड, केमिकल डिवीजन बिरलाग्राम नागदा (आदित्य बिरला ग्रुप ऑफ कम्पनीज) के द्वारा ''बेस्ट एम्पलाय - केमिकल रत्न'' के अवार्ड से कम्पनी के एक्जीक्यूटीव प्रेसीडेंट श्री सुनील कुलवाल द्वारा श्री विमल किशोर मूंदड़ा को नवाजा गया। इस अवसर पर ईष्ट मित्रों व माहेश्वरी समाज बन्धुओं ने श्री मूंदड़ा को बधाई दी एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

## श्री सारड़ा विधायक प्रतिनिधि नियुक्त

**मनासा।** म.प्र. शासन भोपाल के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री श्री कैलाश चावला (विधायक मनासा) ने मनासा नगर के वरिष्ठ भा.ज.पा. नेता एवं समाज सेवी श्री गोपाल सारड़ा को मनासा विधान सभा क्षेत्र का विधायक प्रतिनिधि नियुक्त किया है। गत विधानसभा चुनाव में श्री सारड़ा मनासा विधानसभा के चुनाव प्रभारी भी रहे हैं। साथ ही मंडल अध्यक्ष एवं जिला उपाध्यक्ष के रूप में एवं पूर्व कृषि उपज मंडी अध्यक्ष, पूर्व व्यापारी संघ अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके है। श्री सारड़ा की नियुक्ति पर कैलाश मालपानी, राजुभाई झंवर, रामेश्वर सोढ़ानी, मुरलीधर समदानी, श्याम मंत्री, राजेश मालपानी, सुभाष चोखड़ा, कैलाश आगार, राजेन्द्र मूंदड़ा एवं अन्य समाज बन्धुओं ने शुभकामनाएं दी।

विषय था - 'हॉलीवुड और बॉलीवुड फिल्म मार्केटिंग का एक तुलनात्मक अध्ययन।' जगमोहन मूँदड़ा से डॉ. जगमोहन मूँदड़ा बनने के बाद वे कैलिफोर्निया स्टेट युनिवर्सिटी में अध्यापन का कार्य करने लगे।

पी.एच.डी. के दौरान उनका कई फिल्मी हस्तियों से परिचय हुआ फलस्वरुप, उनके मन में फिल्मों के प्रति जो आकर्षण एवं सम्मोहन छुपा था वह उभरकर सामने आने लगा। 1979 में उन्होंने युनिवर्सिटी को अपना इस्तीफा सौंप दिया।

अमेरिका में हिन्दी फिल्मों को बड़े पर्दे पर दिखाने का श्रेय भी श्री जगमोहन मूंदड़ा को जाता है। उन्होंने वहाँ के एक पुराने, बिकाऊ सिनेमा हॉल को लीज़ पर ले लिया और सबसे पहले उसमें जो फिल्म रिलीज़ की, उसका नाम था 'जूली'। फिल्म को बहुत अच्छा रिस्पांस मिला। इसके साथ ही अमेरिका में हिन्दी फिल्मों के प्रीमियर होना शुरू हो गये और वहाँ 'देस-परदेस, 'शतरंज के खिलाड़ी', 'पति पत्नि और वो' आदि अनेक फिल्मों के प्रीमियर होने लगे।

इसी दौरान उनकी भेंट संजीव कुमार से हुई। जगमोहन जी ने उनके सामने एक फिल्मकार बनने की अपनी दबी हुई इच्छा जाहिर की। संजीव जी उनके साथ काम करने के लिये तुरंत तैयार हो गए। जब यह खबर मीडिया में पहुँची तो जगमोहन जी को अपनी पहली फिल्म 'सुराग' के लिये पूंजी लगाने वाले भागीदार भी मिल गये।

'कमला' (शबाना आज़मी, दीप्ति नवल) जगमोहन जी की दूसरी फिल्म थी। यह फिल्म सच्ची घटनाओं पर आधारित थी, फिर भी सेंसर ने थोड़ी बहुत छेड़-छाड़ की। फिल्म के रिलीज़ पर इण्डियन एक्सप्रेस ने भी केस कर दिया। अपनी फिल्म को बचाने के लिये मूंदडा जी को सुप्रीम कोर्ट तक जाना पड़ा। अंत मे जीत उन्हीं की हुई परन्तु अपनी तमाम चर्चाओं के बावजूद भी फिल्म बाक्स-ऑफिस पर आशातीत सफलता प्राप्त नहीं कर पाई परन्तु 'कमला' ने जगमोहन जी को बतौर निर्देशक स्थापित कर दिया!

श्री मूंदड़ा की दिली इच्छा हमेशा ऐसी ही सोचपरक रियलिस्टिक फिल्में बनाने की रही परन्तु इस व्यवसायिक जगत में फिल्मकार की सफलता का मापदण्ड टिकिट खिड़की पर हुई आमदनी तक ही सीमित है। यही वजह थी कि सन् 1985 में, 'कमला' की रिलीज़ के बाद, जगमोहन जी को वापस अमेरिका लौटना पड़ा।

जब एक भारतीय फिल्मकार किसी भारतीय भाषा में फिल्म बनाता है तो उसे अमेरिका व अन्य देशों में सहज ही स्वीकार किया जाता है परन्तु जब वह एक अमेरिकन फिल्म बनाने की सोचने लगता है, तब हॉलीवुड की नज़रें तनने लगती है। वे सोचते हैं एक भारतीय फिल्मकार अमेरिकी दर्शकों का ज़ायका भला कैसे जान सकता है!

जग मूंदड़ा रोज़गार की तलाश में अमेरिकी फिल्म कम्पनियों के दरवाजे खटखटाते, तो उन्हें ऐसे ही सवालों का सामना करना पड़ता । अस्सी के दशक में वीडियो और टेलीविजन का जाल पूरे विश्व में

## सोनिया की जिंदगी पर मूंदड़ा की फिल्म

**''प्रवोक्ड'' की शूटिंग से मुक्त होने के बाद जगमोहन मूंदड़ा सोनिया गांधी पर फिल्म बनाने की तैयारी में लग गए हैं। मूंदड़ा की 'सोनिया' एक ऐसी विदेशी महिला की जिदंगी पर आधारित होगी जो किसी भारतीय युवक से मोहब्बत करती है और फिर उसी देश की होकर रह जाती है। उनका इशारा सोनिया गांधी की ओर है। सोनिया नामक यह फिल्म राशीद किदवई की चर्चित पुस्तक ''सोनिया : ए बायोग्राफी'' पर आधारित होगी। ब्रिटेन की एक कम्पनी ने इस फिल्म का अधिकार हासिल कर लिया है। फिल्म में सन् 1964-65 में ओर्बासानो से केम्ब्रिज तक के उनके सफर को दिखाया जाएगा। इसमें सोनिया के घरेलू जीवन को भी प्रदर्शित किया जाएगा।**

फिल्म 'बवंडर' में रघुवीर यादव, नंदिता दास

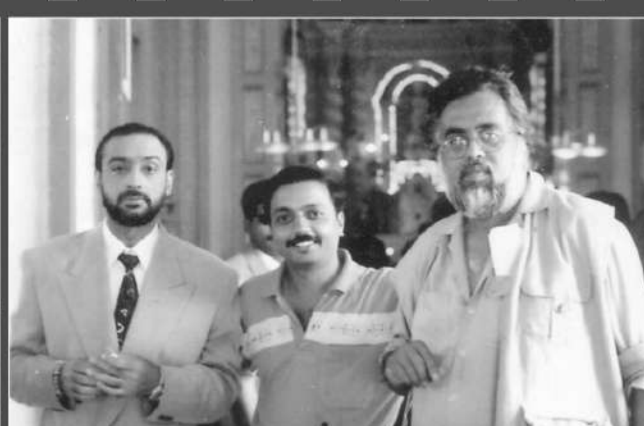

गुलशन ग्रोवर, राजेश राठी, जग मूंदड़ा फिल्म 'मानसून' के सेट पर

फिल्म 'मानसून' में हैलन ब्रॉडी और रिचर्ड टायसन

शबाना आज़मी और दीप्ति नवल फिल्म 'कमला' में

फैल रहा था। हॉलीवुड में कुछ निर्माता कम बजट की 'थ्रिलर' फिल्में बनाने की जुगत में थे। ऐसे में जगमोहन जी की कहानी पर एक निर्माता फिल्म बनाने को राजी हो गया। बजट इतना कम था कि उन्हें फिल्म इंस्टीट्यूट के नए-नए लोग लेने पड़े। इस तरह जग मूंदडा की पहली अमेरिकन फिल्म बनी-'ओपन हाऊस'। उसके बाद जगमोहन जी की मुलाकात अशोक अमृतराज से हुई। उस समय वे इस तरह की कम बजट फिल्मों के किंग निर्माता माने जाते थे। जग ने उनके साथ 'नाईट आईज़' बनाई। इस फिल्म से जग जी को बहुत प्रचार मिला और अशोक अमृतराज को ढेर-सारा पैसा! इस फिल्म के बाद जग मूंदड़ा पर 'इरोटिक थ्रिलर' बनाने का लेबल चिपक गया। इस तरह की फिल्मों के लिए वे अंतर्राष्ट्रीय मार्केट में एक 'ब्रांडनेम' बन गए। फिल्म की सफलता से प्रभावित होकर अमृतराज ने नाईट-आईज़ सेकण्ड भी बनाई पर वो जग के निर्देशन में नही थी।

जगमोहन जी की जगह कोई और होता, तो शायद बहुत खुश होता परन्तु वे अपने इस लेबल से बहुत आहत हैं। बॉलीवुड के कुछ लोग तो उन्हें 'पोर्न किंग' समझते हैं परन्तु ये सही नही है। उनकी अंग्रेज़ी फिल्मों में सिर्फ सेक्स नहीं होता बल्कि एक रोचक कहानी का ताना-बाना भी होता है। सेक्स तो पूरी कहानी का मात्र 10 प्रतिशत होता है।

बॉलीवुड ने सेक्स को बहुत असहज बना दिया है। हमारा पूरा समाज उसे कौतूहल की दृष्टि से देखता है परन्तु हॉलीवुड में सेक्स का प्रस्तुतिकरण बहुत सहज होता है। वहाँ यह उतना ही सहज है जैसे हिन्दी फिल्मों में 4 गानें।

## उज्जैन भी आ चुके हैं श्री मूंदड़ा

***जगमोहन मूंदड़ा एक बार उज्जैन भी आ चुके हैं। उन दिनों वे एक अंतर्राष्ट्रीय डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म 'टरब्यूलेंट वॉटर्स' प्रोड्यूस कर रहे थे। मेघा पाटकर के नर्मदा बचाओ आंदोलन पर आधारित 46 मिनिट की इस फिल्म के निर्देशन का जिम्मा उन्होंने उज्जैन निवासी राजेश के. राठी को दिया था। अपनी दो फिल्मों कमला एवं बवंडर में स्वयं जगमोहन मूँदडा और उनके मुख्य सहायक राजेश राठी ने छोटी-छोटी भूमिकाएं की हैं।***

## बॉलीवुड का सफर

सुराग, कमला
विषकन्या, बवंडर

## हॉलीवुड का सफर

ओपन हाऊस, जिग सॉ पज़ल
आई विटनेस टू मर्डर
नाईट आईज़, लास्ट कॉल
लीगल टेंडर, एलए गौडेस
द अदर वुमन, वाइल्ड कैक्टस
द अदर मैन, ट्रॉपिकल हीट
इंप्रोपर कंडक्ट
इर्रेजिस्टेबल इंपल्स
टेंटेड लव, शेड्स ऑफ ग्रे
मानसून, परफ्यूम्ड गार्डन्स
क्रिमिनल इंटेंट, बैक वॉटर्स
नताशा, प्राइवेट मोमेंट्स
प्रवोक्ड

एक लम्बे अरसे बाद उन्होंने अपने स्वभाव की फिल्म बनाई 'बवंडर'। नंदिता दास, रघुवीर यादव द्वारा अभिनीत भँवरीदेवी कांड पर आधारित इस फिल्म का अंग्रेज़ी नाम था 'सैंड-स्टॉर्म। अब तक यह फिल्म लगभग 9 अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है लेकिन तमाम वाह-वाहियों के बावजूद भी बॉक्स ऑफिस का जिन्न प्रसन्न नहीं हुआ है परन्तु हारना जगमोहन जी के स्वभाव में नहीं है।

अब 'प्रवोक्ड' उनकी पहली अंग्रेज़ी फिल्म होगी - जो सत्य घटना पर आधारित है। ऐश्वर्या रॉय इसकी मुख्य भूमिका में है। फिल्म की पूरी शूटिंग लंदन में हुई है। जल्द ही यह फिल्म पर्दे पर आयेगी। अंग्रेज़ी में यह उनकी पहली बागी फिल्म होगी और उम्मीद है यह उन पर लगे 'पोर्न किंग' के लेबल को मिटाने में सफल होगी।

यह परंपरा कितनी अजीब है! अपने क्षेत्र में सफल लोगों को उनकी इमेज में कैद कर दिया जाता है। अगर एक फिल्मकार फिल्म की भाषा जान जाए तो वो अपनी पंसद से कैसी भी फिल्म बना सकता है परन्तु निर्माताओं की तंग नज़र और बॉक्स ऑफिस के आंकड़े उसे स्वतंत्रता से कोई रचना नहीं करने देते। शायद इसीलिये आज 25 फिल्मों का सफर तय करने के बाद भी जगमोहन जी की 'तलाश' जारी है। ■

# ईईटी आधारित कराधान संबंधी शंकाओं से घिरे निवेशक

■ **रामनिवास लखोटिया**, दिल्ली

> **परिपक्वता पर प्राप्त विभिन्न बचतों का संचय कर के दायरे में नहीं आता है। हालांकि, ईईटी व्यवस्था के प्रस्तावित कार्यान्वयन के चलते करदाताओं में कई तरह के विवाद और संशय पैदा हो रहे हैं। करदाताओं के मन में उठते ऐसे ही कई सवालों का जवाब दे रहे हैं, प्रसिद्ध कर सलाहकार-**
> **श्री रामनिवास लखोटिया**

वित्त मंत्री पी चिदम्बरम ने बजट 2005-2006 पेश करते वक्त सभी प्रकार की बचतों के लिए पूरी तरह ईईटी (एग्जेंप्ट-एग्जेंप्ट-टैक्स्ड) व्यवस्था अपनाने की इच्छा व्यक्त की थी। अपने भाषण में चिदम्बरम ने कहा था कि बचत पर कराधान एक जटिल मुद्रा है, लेकिन हम इस संबंध में सर्वश्रेष्ठ अंतरराष्ट्रीय पद्धति से लाभान्वित हो सकते हैं। वित्त मंत्री ने इस बात का संकेत दिया कि भविष्य में कराधान का नया सिद्धान्त ईईटी अपनाया जाएगा। 1-1-2004 या इसके बाद भरती होने वाले सरकारी कर्मचारियों की पेंशन योजना में सरकार के योगदान के संबंध में यह पहले से ही आंशिक तौर पर लागू है। आमतौर पर बचतों पर रियायती कर सहूलियत हासिल होती है। सार्वजनिक भविष्य निधि, कर्मचारी भविष्य निधि, सरकारी भविष्य निधि से प्राप्त होने वाला ब्याज पूरी तरह कर मुक्त होता है। इसी तरह, परिपक्वता पर प्राप्त विभिन्न बचतों का संचय कर के दायरे में नहीं आता है। हालांकि, ईईटी व्यवस्था के प्रस्तावित कार्यान्वयन के चलते करदाताओं में कई तरह के विवाद और संशय पैदा हो रहे हैं। ईईटी आधारित कराधान व्यवस्था के तहत बचत या निवेश के संबंध में सम्पूर्ण कर छूट या कटौती की सुविधा मिलेगी और निवेश की निरंतरता से प्राप्त आय भी कर मुक्त रहेगी लेकिन परिपक्वता कर निकासी या संचित धन पर पूरी कर देयता होगी। लोगों में इस बात को लेकर संशय है कि वर्तमान में कई तरह के धन संचय पर मिल रही सम्पूर्ण कर छूट का क्या होगा?

वर्तमान स्थिति - मौजूदा परिस्थितियों में जीवन बीमा प्रीमियम, सार्वजनिक भविष्य निधि, कर्मचारी भविष्य निधि या सरकारी भविष्य निधि में योगदान आदि पर आयकर की धारा 88 के तहत निर्धारण वर्ष 2005-2006 तक कर रियायत हासिल होगी। अधिकतम 1,00,000 रूपये की ऐसी बचतों पर निर्धारण वर्ष 2006-2007 से आयकर की धारा 80 सी (धारा 80 सीसीई के साथ पढ़े) के तहत बिना किसी क्षेत्रवार सीमा के पूर्ण कर कटौती की सुविधा हासिल होगी। हालांकि, अधिकतर बीमा पॉलिसियों की परिपक्वता पर जीवन बीमा निगम या किसी और बीमा कंपनी से प्राप्त राशि आयकर अधिनियम की धारा 10 (10 डी) के तहत पूरी तरह कर मुक्त है। इसी तरह, सरकारी भविष्य निधि या सार्वजनिक भविष्य निधि आदि की परिपक्वता पर प्राप्त राशि आयकर अधिनियम की धारा 10 (11) कर मुक्त है। आयकर अधिनियम की चौथी अधिसूचना के खण्ड अ के तहत किसी मान्यता प्राप्त भविष्य निधि में कर्मचारी द्वारा किए गए योगदान पर देय संचित बकाया राशि आयकर अधिनियम की धारा 10 (12) के तहत पूरी तरह कर मुक्त होगी। सरकार ने इन फंडों से निकासी पर कर लगाने का प्रस्ताव रखा है। प्रस्तावित ईईटी कानून लागू किए जाने के बाद बचतों की परिपक्वता राशि या निकासी पर कर में रियायत मिलते रहने की संभावना तो है लेकिन करदाता इस बात को लेकर डर रहे हैं कि भविष्य निधि फंड एकाउंट से संचित धन या जीवन बीमा निगम या किसी और बीमा कंपनी के पास जमा राशि के संबंध में कर के क्या प्रावधान होंगे। करदाताओं का डरना वाजिब है क्योंकि नए प्रावधान के तहत जाने-अनजाने में पूरे के पूरे धन संचय पर कर लागू

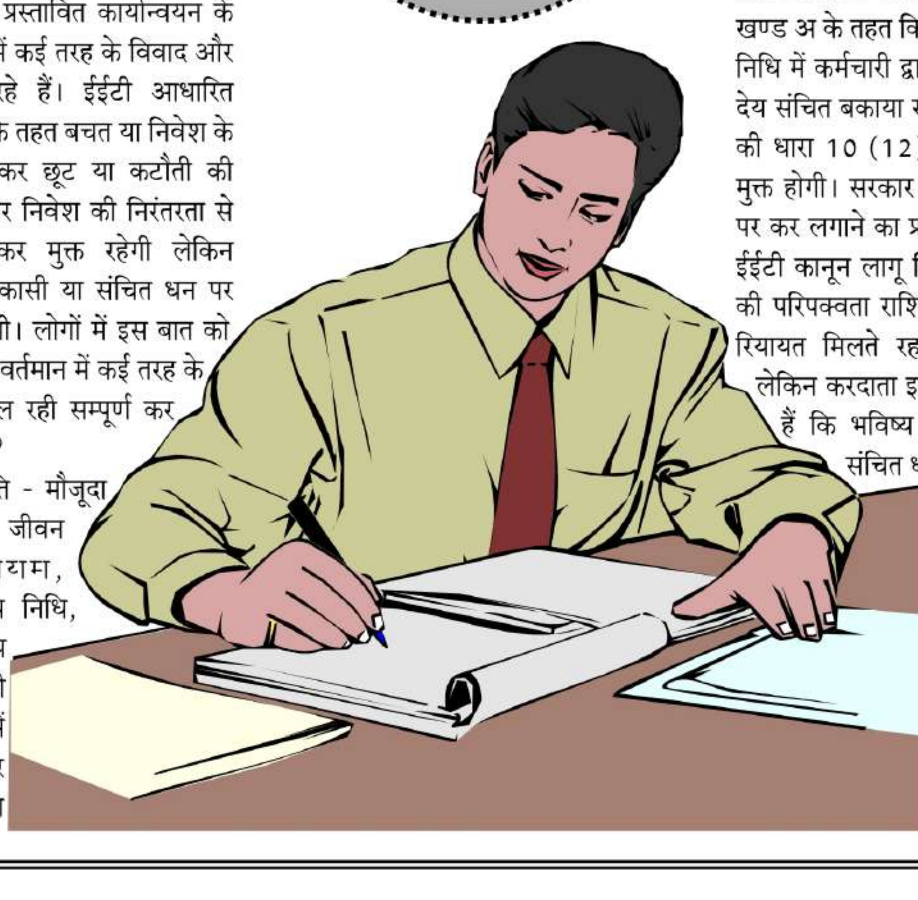

किए जाने से उन पर भारी विपत्तियां आएगी और यह भेदपूर्ण वाली भी होगी। प्रस्तुत है एक उदाहरण-

श्रीमान अ एक वरिष्ठ नागरिक हैं और उन्हें अप्रैल, 2006 में एंडोमेंट पॉलिसी की परिपक्वता पर एक करोड़ रूपये मिलने वाले हैं। अगर निर्धारण वर्ष 2007-2008 के संबंध में वित्त वर्ष 2006-2007 में प्राप्त संचित राशि पर ईईटी व्यवस्था के प्रावधान लागू होते हैं तो उन्हें इस राशि पर 30 फीसदी के आयकर के साथ 10 फीसदी का अधिभार देना होगा। इस तरह, कुल आयकर देयता 33,00,000 रूपये होगी। यह एक हास्यास्पद स्थिति है और यह भेदभाव को जन्म देगी। जरा सोचिए, अगर इन्हें मार्च, 2006 में यह राशि प्राप्त होती तो आयकर अधिनियम की धारा 10 (10 डी) के प्रावधानों के तहत पूरी तरह कर मुक्त होती।

**व्याख्या पर क्या कहता है कानून-** उच्चतम न्यायालय समय-समय पर कर कानूनों की व्याख्या पर फैसले देता है। हालांकि, कानून की शाब्दिक व्याख्या की जानी चाहिए, लेकिन उच्चतम न्यायालय ने के. गोविन्दन एंड संस बनाम सीआईटी (2001) 247 आईटीआर 192 (एससी) के मामले में इस बात को साफ कर दिया कि राजस्व संबंधी कानूनों की अर्थहीन व्याख्या से बचा जाना चाहिए। सीआईटी बनाम पोद्दार सीमेंट प्राइवेट लिमिटेड व अन्य (1997) 226 आईटीआर 625 के मामले में उच्चतम न्यायालय ने कहा कि व्याख्या के अर्थहीन होने की स्थिति में निर्धारित के फायदे वाली व्याख्या अपनाई जानी चाहिए। उच्चतम न्यायालय ने सीआईटी बनाम ग्वालियर रेयान सिल्क मैन्युफैक्चरिंग कंपनी लिमिटेड (1992) 196 आईटीआर 149 (एससी) के मामले में दिए गए फैसले में कहा कि कर कानूनों की व्याख्या तार्कित और कानून के अनुरूप होनी चाहिए। इसी तरह, उच्चतम न्यायालय ने बजाज टेम्पो लिमिटेड बनाम सीआईटी (1992) 196 आईटीआर 188 मामले में कहा कि छूट पर रोक लगाए जाने की स्थिति में उसे बाधा न मानकर कर कानून के उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास माना जाना चाहिए। इसी तरह आयकर अधिनियम की धारा 10 (10 डी) या धारा 10 (11) या धारा 10 (12) का उद्देश्य करदाता को संचित धन पर आयकर की सम्पूर्ण छूट की सुविधा देना है इसलिए नई कर व्यवस्था के तहत प्रावधान ऐसे होने चाहिए कि करदाताओं को मिलने वाली कर छूट आगे भी मिलती रहे। विधायिका चाहे तो छूट को बचत और धन संचय तक सीमित कर सकती है।

**शंकाओं का समाधान-** उच्चतम न्यायालय द्वारा दिए गए ऊपर उल्लेखित फैसलों और अन्य न्यायालयों द्वारा दिए गए विभिन्न फैसलों के अनुसार केन्द्र सरकार के लिए जरूरी हो गया है कि वह ईईटी आधारित कराधान व्यवस्था के तहत नए प्रावधान लागू करते समय इस बात का ध्यान रखे कि करदाताओं को जीवन बीमा के प्रीमियम या सार्वजनिक भविष्य निधि या सरकारी भविष्य निधि या कर्मचारी भविष्य निधि या मान्यता प्राप्त भविष्य निधि से प्राप्त होने वाले संचित धन पर पुरानी व्यवस्था में मिल रही सम्पूर्ण कर छूट की सुविधा मिलती रहे। अगर ऐसी बचतों या निकासियों पर कर लगाना बहुत जरूरी हो गया हो तब इसे नई बचत योजनाओं पर लगाया जाना चाहिए जिन्हें भविष्य में उस वक्त के कानूनों के मुताबिक कटौती की सुविधा हासिल होगी। चूंकि इस मामले में शंका दूर नहीं हुई है और उधर करदाता संचित धन निकाल रहे हैं या निकालने की सोच रहे हैं या जीवन बीमा पॉलिसी सरेंडर कर रहे हैं या इसके बारे में सोच रहे हैं तो सरकार को चाहिए कि वह इस बात की घोषणा करे कि पुरानी बचतों को निकासी की परिपक्वता पर संचित धन को पहले की तरह कर से मुक्त रखा जाएगा और कर सिर्फ वैसे बचतों पर लागू होगा जो भविष्य में कर छूट दिए जाने के बारे में कही गई होंगी। ■


• अतुल क्लॉथ स्टोर्स • श्री बालाजी कंस्ट्रक्शन
• मे. शंकरलाल मोहनलाल
( कपड़ा व्यवसायी )
श्री अतुल माहेश्वरी ( इंजी. ), श्री संजय माहेश्वरी, श्री रुपेश माहेश्वरी
श्री सीताराम माहेश्वरी
स्टेशन रोड, हरसूद ( छनेरा )
फोन नं. - 07327-272339, 272333
मोबाईल नं. - 94250-13886

# नज़रिया बदलिए नज़ारे बदल जाएंगे

■ **गोपिका मंत्री**, खण्डवा

**ये** युक्ति आज के समय में हर व्यक्ति पर लागू होती है। अपने दृष्टिकोण, नज़रिए या एटीट्यूड से ही मानव बड़ा और छोटा महसूस करता है। यह बात बिल्कुल सच है कि हम जैसा सोचते हैं, महसूस करते हैं वैसे ही हम बन जाते हैं। जीवन में बदलाव लाने के लिये सबसे पहले हमें अपने दृष्टिकोण को बदलना होगा। कहते हैं मानव स्वयं अपना भाग्य बनाता है। वह दिन-रात अपने व्यवहार और विचार से कुछ ना कुछ संचय करता रहता है। जीवन के हर पल से कुछ सीखता रहता है।

मानव मन के भीतर आवरणों की खींचतान बनी रहती है। वह अपने मन के भीतर नए-नए आवरण बनाता है और पुरानों को हटाकर उन्हें जगह दे देता है। इसी से दृष्टि का स्पष्टीकरण बना रहता हैं जिसे नज़रिया या दृष्टिकोण कहते हैं। हर व्यक्ति की अपनी सोच होती है, अपनी तय की हुई मंज़िल होती है। वह अपने हर काम में कामयाब होना चाहता है और वह कामयाब हो भी सकता है बशर्ते उसके पास सकारात्मक, व्यापक और विचारशील नज़रिया हो। यह हम मनुष्यों का स्वभाव है की जितनी जल्दी हम उत्साहित होते हैं उतनी ही जल्दी निराश भी। ये सही है की नज़रियों का सकारात्मक और नकारात्मक होना माहौल और परिस्थितियों पर अधिक निर्भर करता है परन्तु हमारा स्वभाव कुछ ऐसा है की अपनी गलती का दोष हम सदा दूसरों पर डाल देते हैं। हरदम स्वयं को अच्छा और दूसरों को बुरा बताते हैं। हमारे स्वभाव का यह अंश नकारात्मक नज़रिए को उजागर करता है। आज तक जितनी भी महान आत्माएं हुईं है उनके पास सकारात्मक नज़रिए की दौलत थी। उनकी कामयाबी का शत-प्रतिशत श्रेय उनके नज़रिये को ही जाता है। बात साफ है कि हमारा नज़रिया ही हमें अपने मकसद को

पाने में मदद करता है। जिंदगी के हर क्षेत्र में दृष्टिकोण बहुत अहम् भूमिका अदा करता है। चाहे हमारी निजी जिंदगी हो या कार्यक्षेत्र। इंसान बिना अच्छे नजरिए के ना तो अच्छे काम कर सकता है और ना ही सफलता पा सकता है। महान लेखक डब्ल्यू क्लीमेंट स्टोन कहते हैं -''सभी व्यक्ति दिखाई तो एक से देते हैं लेकिन उनके मूल व्यवहार में एक मामूली सा अंतर होता है और वह है नज़रिए का।''

कुछ व्यक्ति सकारात्मक प्रवृत्ति के होते हैं और कुछ नकारात्मक प्रवृत्ति के। यही मामूली अंतर उनमें बड़ी भिन्नता पैदा करता है।

सकारात्मक नज़रिए वाला व्यक्ति हमेशा हर कार्य में सफलता के पायदान पर खड़ा रहता है जबकि नकारात्मक सोच का व्यक्ति गर्त में फंसा हुआ। जीवन में कोई ख़ास मुकाम पाना है तो दृष्टिकोण की सीमा बढ़ाना होगी। जिस समय से आपने सकारात्मक सोच, नज़रिया अपना लिया आपके जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन आते जाएंगे। विशेषतः निम्न तीन तत्व हैं जो नज़रिए को सकारात्मक बनाने में हमारी सहायता करते हैं।

1. अच्छा माहौल, संस्कार और उसूल। 2. इच्छा शक्ति। 3. बेहतर शिक्षा।

दृष्टिकोण तय करने में सबसे महत्वपूर्ण है-माहौल। हम किस तरह के माहौल में रहते हैं यह ज्यादा जरूरी है, क्योंकि माहौल से तहजीब बनती है, संस्कार आते हैं और संस्कारों के बूते पर ही हम अपने लिए कुछ नियम और उसूल बनाते हैं। अच्छे और व्यवस्थित माहौल में काम करने वाले एक मामूली से चपरासी की भी कार्यशक्ति बढ़ जाती है, वहीं बुरे और खराब माहौल में अच्छे एवं कार्यशील व्यक्ति की कार्यक्षमता भी घट जाती है। एक सच यह भी है की अच्छे माहौल और संस्कार में पला व्यक्ति अच्छे विचारों का धनी होता है। बात सीधी है, जिस तरह के माहौल में हम रहेंगे या माहौल बनाएंगे वैसी ही हमारी सोच, हमारा नज़रिया भी बन जाएगा। अच्छा नज़रिया तय करने में घर का, कार्यक्षेत्र का या जिस भी संगति में हम रहते हैं, उसका माहौल हमें बहुत प्रभावित करता है।

इसी क्रम में दूसरा तत्व होता है - इच्छा शक्ति। हमारी इच्छा शक्ति किसी कार्य को ईमानदारी से करने में जितनी गहरी होगी उतनी ही कामयाबी हमें प्राप्त होगी। जिदंगी साइकल के एक पहिए के समान है जो टूटी-फूटी सड़क पर चलाई जा रही है। सफर तय करते समय रास्ते में कई विघ्न, बाधाएं और कठिनाइयां आती हैं। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे? पीछे हट जाएंगे या डटकर सफर तय करने में लगे रहेंगे। यदि आप पीछे हट जाते हैं तो इसका मतलब है आपकी इच्छाशक्ति अपनी मंज़िल को पाने के लिए लालायित नहीं है या परेशानियों को देखते ही आपकी इच्छा शक्ति कमजोर पड़ गई है परन्तु जब आप डटकर जिंदगी के मैदान-ए-जंग में खड़े होते हैं तो इसका मतलब आप अपनी इच्छा शक्ति के विजेता बन गए। आपके नज़रिए ने, आपके क्रांतिकारी दृष्टिकोण ने आपकी इच्छा शक्ति को भी परास्त कर दिया।

तीसरा महत्वपूर्ण कारक है - बेहतर या अच्छी शिक्षा। लोग समझते हैं कि बड़ी-बड़ी डिग्रियां हासिल कर लेने से हम कामयाब हो गए या ज्ञानी बन गए लेकिन किताबों और सूचनाओं के सागर में गोते लगाने मात्र से हम ज्ञानी या समझदार नहीं हो जाते। ज्ञान और समझ के लिए मोटी-मोटी किताबों की जरूरत नहीं है, आवश्यकता है सिर्फ अच्छे नज़रिए की। इसके लिए जरूरी है अच्छी शिक्षा अर्थात् ऐसी व्यवहारिक शिक्षा जो हमें केवल रोजी-रोटी कमाना नहीं बल्कि जीने का तरीका सिखाती हो। शिक्षा इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा का प्रभाव अनंतकाल तक व्यक्ति के ज़ेहन में बना रहता है। इसके गहरे असर की लहरें अनगिनत बार मन और मस्तिष्क के सागर में उफनती रहती हैं। अच्छे नज़रिए के लिए किताबी ज्ञान से अधिक व्यवहारिक ज्ञान की शिक्षा जरूरी है। दृष्टिकोण को लेकर एक कहावत है -

**YOU CAN'T CARPET THE EARTH, BUT YOU CAN WEAR A PAIR OF FOOTWARE.**

अर्थात् आप पूरी पृथ्वी पर कारपेट नहीं बिछा सकते, किन्तु आप एक जोड़ी जूते पहनकर इसे महसूस कर सकते हैं। यह कहावत भी अच्छे नज़रिए के उस पहलू को दर्शाती है कि जो हमारे पास नहीं हैं उसका रोना-रोने की बजाए जो हमें कुदरत से मिला है, उसी में जिंदगी को आनंद से जीएं। सच मानिए जिस दिन हम अपने नजरिए में अच्छा और सकारात्मक बदलाव ले आए उस दिन से ही हमारी परेशानियां, चिंताएं सब कुछ खत्म हो जाएंगी। फिर आप भी कह सकेंगे-


**नये युग के व्यवसाय क्षेत्र में सुनहरा अवसर**

**21 वीं सदी के अद्भुत उत्पादन**

जागतीय आरोग्य संघठन (W.H.O.) निर्देशित
वैज्ञानिक अनुसंधानों पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा प्रवर आरोग्यवर्धक
''धरती की संजीवनी'' कुदरत की अनमोल देन ''गेहूं के जवारों'' से प्राप्त

**क्लोरोफिल ग्रीन टी**

जो कैंसर व अनेक गम्भीर बिमारियों पर प्रतिबंध हेतु उपयोगी।
झेन टकारा - शरीर से विषैले तत्व निकालने में उपयोगी बायोपॅच तथा अनेक उत्पादन।
**अपने क्षेत्र में प्रतिनिधी/डीलर/स्टॉकिस्ट बने**

भरपूर लाभ पाएं!!!

महत्वाकांक्षी - युवक/युवती, स्त्री/पुरुष, व्यवसायिक,
डॉक्टर, आयुर्वेदतज्ञ, नॅचरोपॅथ और सेवा संस्थाओं को सुनहरा मौका
*आरोग्य, सौन्दर्य व समृद्धि के साथ अनेक लाभ!!!*
अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें या लिखे

**सुनील माहेश्वरी**

प्लॉट नं. 6-बी, विष्णु नगर, जलगांव (महाराष्ट्र) 425001मोबाईल - 09370002216

समाज-सरोकार

# पाश्चात्य संस्कृति की गुलामी

■ उष्मा मालू, इन्दौर

एक ही उल्लू काफी है बरबाद-ए-गुलिस्ता करने को, हर शाख पे उल्लू बैठा है तो अंजामें गुलिस्तां क्या होगा? हमारे देश की वर्तमान स्थिति कुछ इसी तरह की है कि आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से हमारी भारतीय संस्कृति की धवलता पर काजल रूपी कालिख के धब्बे दिखाई दे रहे हैं। आज की युवा पीढ़ी ने भारतीय संस्कृति की गरिमा

**आज के युवाओं को 'वेलेन्टाइन-डे' और 'फ्रेन्डशिप डे' जैसे त्यौहार मनाना यदि याद रह सकता है तो 'राम नवमी' और 'शिवरात्रि' जैसे त्यौहार वे क्यों नहीं मना पाते। क्या इस बात पर ध्यान दिया है कभी हमने? आज की युवतियों में 'मिस इंडिया' और 'मिस यूनिवर्स' जैसे खिताब पाने की चाह तो बहुत है किन्तु 'सीता' और 'सावित्री' जैसी महान् देवियों के त्याग और तपस्या जैसे गुणों को आत्मसात करने की ललक नहीं है। क्या उन्हें इस ओर प्रेरित करने की कोशिश की हैं हमने कभी?**

पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। राम-कृष्ण के आदर्श, गांधी एवं नेहरू जैसे महापुरूषों के जीवन के प्रेरक प्रसंग, उनसे जुड़ी गाथाएँ समय के गर्भ में आज न जाने कहाँ खो गए है। महापुरूषों ने अपनी युवावस्था दांव पर लगाकर, अपने घर-परिवार की चिन्ता छोड़कर जिस भारत देश को गुलामी की बेड़ियों से मुक्ति दिलाई थी आज की युवा पीढ़ी ने उसी भारत को एक बार फिर गुलामी के कटघरे में ला खड़ा किया है चाहे वह गुलामी पाश्चात्य संस्कृति की ही क्यों न हो? आज की युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति के मोह पाश में जकड़कर पतन के गर्त की ओर उन्मुख हो रही है।

आज की युवा पीढ़ी अपने आदर्शों को खोकर अपने कर्तव्यों से विमुख हो रही है, अपने लक्ष्यों से भटक रही है। युवा पीढ़ी की इस दिशाहीनता में दोष अकेली युवा पीढ़ी का ही नहीं है, दोषी स्वयं हम भी हैं। जब आज के युवाओं को 'वेलेन्टाइन-डे' और 'फ्रेन्डशिप डे' जैसे त्यौहार मनाना यदि याद रह सकता है तो 'राम नवमी' और 'शिवरात्रि' जैसे त्यौहार वे क्यों नहीं मना पाते। क्या इस बात पर ध्यान दिया है कभी हमने? आज की युवतियों में 'मिस इंडिया' और 'मिस यूनिवर्स' जैसे खिताब पाने की चाह तो बहुत है किन्तु 'सीता' और 'सावित्री' जैसी महान् देवियों के त्याग और तपस्या जैसे गुणों को आत्मसात करने की ललक नहीं है। क्या उन्हें इस ओर प्रेरित करने की कोशिश की हैं हमने कभी?

हमारे संस्कारों में कहीं न कहीं कोई त्रुटि अवश्य रह गई है। युवा पीढ़ी को गुमराह करने में हमारा भी योगदान है। हमने इस पीढ़ी को वातावरण ही ऐसा दिया है कि वह सीख भी क्या पायेगी? बच्चों में संस्कार बचपन से ही रोपे जाते हैं। आज की व्यस्त जिन्दगी में पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाने की होड़ में महिलाएं यदि घर-परिवार की चिंता छोड़ केवल आर्थिक संसाधन जुटाने की फ्रिक में घर से बाहर आधे से ज्यादा वक्त गुजारेंगी तो बच्चों की परवरिश पर इसका प्रभाव विपरीत तो पड़ेगा ही। जिन घरों के बुजुर्ग भी साथ रहते हैं और बच्चों के आधुनिक माता-पिता द्वारा उनकी अवहेलना की जाती है तो बच्चों पर इसका प्रभाव होगा? यदि हम अपने माता-पिता का आदर सम्मान नहीं करेंगे तो अपनी संतानों से कैसे अपेक्षा कर सकते हैं कि वे बुढ़ापे में हमारी लाठी बनकर हमें सहारा देंगे। हम यदि निंबोरी जैसा कड़वा बीज बो रहे हैं तो क्यों आम जैसे मीठे

फल की आशा करते हैं। नीम के बीज बोने पर तो निम्बौरी ही प्राप्त की जा सकती है।

हमें यह नही भूलना चाहिए कि देश की आजादी दिलाने में कभी देश की इसी युवा पीढ़ी ने आजादी के हवनकुण्ड में अपने प्राणों की आहुति बड़े जोश से दी थी, किन्तु वक्त के थपेड़ों में बहकर यदि वही पीढ़ी आज अपने होश खो बैठी, अपने मार्ग से दिग्भ्रमित हो गई तो उन्हें फिर से झकझोरना होगा, जगाना होगा।

आज की पीढ़ी आधुनिकता के जिस चक्रव्यूह में फँस गई है उसमें से निकलना भले ही मुश्किल हो पर नामुमकिन नहीं है।

आज की युवा पीढ़ी को दिग्भ्रमित करने में मीडिया का भी बहुत बड़ा हाथ है। आज चलचित्रों व टी.वी. सीरियलों के माध्यम से मनोरंजन के नाम पर उन्हें जो परोसा जा रहा है वह क्या उचित है? उचित और अनुचित की बात छोड़िये क्या हमने कभी इनका विरोध किया? जब हमने ही इन अश्लीलता, आदर्शहीनता, कर्त्तव्य विमुखता जैसे अवगुणों को अपने चरित्र में आत्मसात कर लिया है तो कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि वह मर्यादित रहे। मर्यादा का शील भंग हमने किया है और दोष मासूम पीढ़ी पर डाल रहे हैं जो कि सरासर अन्याय है। इंटरनेट और वेबदुनिया को हम संसार की जानकारी प्राप्त करने के बजाय यदि अश्लील और सस्ते मनोरंजन का साधन ही माने तो युवा पीढ़ी को क्या संस्कार दे पायेंगे?

युवा पीढ़ी को दिशाहीन करने में दोषी माता-पिता से लेकर सरकार तक है। गंदी आदर्श विहिन फिल्मों एवं संस्कारहीन दूरदर्शन के सीरियलों के प्रभाव से उन्हें हमने कभी बरजा है? देश तो युवा पीढ़ी नहीं चला रही है। सत्ता पर तो आज भी बुजुर्गे का ही प्रभुत्व है तब वे क्यों नहीं युवाओं को दिग्भ्रमित करने जैसे दूरदर्शन के अश्लील कार्यक्रमों पर प्रतिबंध लगा पा रहे है जिनके द्वारा देश में हिंसा और अपराध बढ़ते जा रहे हैं। ना तो हमने कभी इस सब बातों के प्रति आवाज उठाई और ना ही हमारी सरकार ने इस ओर कोई ठोस कदम उठाया।

इस क्रांति का बीड़ा अब युवा पीढ़ी को स्वयं ही उठाना होगा और गांधी व नेहरू जैसे महापुरूषों के आदर्शों पर चलकर अपनी खोई गरिमा पुनः प्राप्त करनी होगी। ▪

# कन्या भ्रूण हत्या

**प्रेमचन्द डाड़**
बड़नगर

*सागर की लहरों से रेती पर आई,*
*पड़ी-पड़ी सीप में वह मुस्काई,*
*प्रथम रश्मियाँ सूर्य की,*
*पूछ रही थी उसका नाम,*
*नाम-वाम तो बता न पाई,*
*पहले ही हो गया उसका काम तमाम।*

*हाय विधाता को भी दया न आई,*
*जननी को भी कन्या रास न आई,*
*नारी ही हो गयी नारी की बैरी,*
*प्रतिरोध तो दूर रहा, अनुकूलता दिखलाई।।*

*फिर हुआ बर्बर हिंसा का नंगा नाच,*
*पहले मरी संवेदनाएँ, फिर भावुकता ने दम तोड़ दिया,*

*करुणा और ममता का भी गला घोंट दिया,*
*हथौड़ी के पहले ही वार ने कर दी खोपड़ी चकनाचूर,*
*तदन्तर चाकू औ कैंची ने,*
*हाथ-पैर और मुँह को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँट दिया,*
*मानवता भी लजा गई,*
*शैतानियत को किन्तु तनिक भी शर्म न आई।*

*पाट में पड़े टुकड़े पूछ रहे थे मम्मी से, पूछ रहे थे पापा से,*
*यदि यह सब कुछ करना ही था,*
*तो क्यूँ लाए मुझे इस दुनिया में?*

*थूकना ही था तो थूक देते किसी थूकदान में,*
*प्रत्युतर वे कुछ दे न पाए,*
*शर्मसार निगाहों से कमरे में आए,*
*कक्ष में टंगा हुआ वेद वाक्य कर रहा था अट्टाहस*
*"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः"*

# प्रकृति प्रेरणा

*मनुष्य को जीवन में जरुरत है प्रेरणा की*
*पहुँच सकता है वह शिखर तक तभी*

*फूल न सिर्फ महकते हैं*
*परन्तु जीवन खिलकर*
*जीने को कहते हैं।*

*नदियाँ हमेशा आगे बढ़ती हैं*
*प्रगति ही सार्थक जीवन है, कहती हैं।*

*समुद्र गंभीर और गहरा है*
*शांत और गहरी सोच, रखने को कहता है।*

*चंद्रमा है कितना शांत और निर्मल*
*प्रेरणा देता है हमको प्रकाश में रहने की हर पल*

*आकाश है व्यापक और अनंत*
*बताता है हमें उँचे उठने का पंथ*

*ये है कुछ पंखुडियाँ प्रकृति की*
*बस जरुरत है इन्हें जीवन में उतारने की*

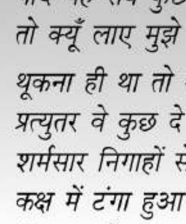

**मिलन झँवर, उज्जैन**

## पौराणिक-कथा

**पुराण हिन्दुओं की अमूल्य सम्पदा है उनमें कथाओं के माध्यम से ऐसे जीवन मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया गया है जो सर्वकालिक हो। पुराण का एक अर्थ पुराना और नया एक साथ होता है। इसी विशेषता के कारण इनकी कथाएं पुरानी तो है पर नए समाज, नए लोगों के मार्गदर्शन का अक्षय स्त्रोत भी है और फिर सदाचरण, सत्य, संयम, सेवा, सद्‌कर्म, आदि जीवन मूल्य तो कभी पुराने हो ही नहीं सकते क्योंकि कोई भी सभ्य समाज इनके बगैर सम्पन्न, समृद्ध और चिरंजीवी नहीं हो सकता और पुराण की लगभग सभी कथाएं इन्हीं में से किसी ना किसी जीवन मूल्य या आचरण का गुण-गान करती है।**

# चरित्र की चमक सोने से अधिक

■ **डॉ. नारायण तिवारी**, उज्जैन

**म**हाराजा चक्रवेणु चरित्रवान, संयमी, सदाचारी एवं प्रजा पालक थे। विशाल साम्राज्य के सम्राट होकर भी वे स्वयं को प्रजा का सेवक और राज्य का न्यासी समझते थे। भोग, वैभव के प्रति आकर्षण और अहंकार उन्हें छू भी नहीं पाया था। उनके राज्य में प्रजा समृद्ध, सुखी एवं धार्मिक थी। राज्य में निष्कंटक, धर्माचरण एवं अनुष्ठान होते थे। एक बार एक सार्वजनिक धर्मानुष्ठान में राजरानी भी शामिल हुईं। राजा चक्रवेणु के अनुसार वे स्वयं भी साधारण कपड़े एवं आभूषण धारण किये हुए थी। स्त्रियों में कपड़ों, गहनों के प्रति सहज आकर्षण होता है। नगर की धनाढ्य घरों की महिलाएं राजरानी का पहनावा देखकर आश्चर्य में पड़ गईं। उन्होंने उलाहना दिया कि रानी को रानी होना ही नहीं दिखना भी चाहिए। शुद्ध हृदय रानी महिलाओं की इन बातों से प्रभावित हुईं। राजमहल लौटकर उन्होंने राजा से इसकी चर्चा की और अपरोक्ष अपमान की बात भी कही।

विद्वान राजा धर्म संकट में पड़ गए। वे ना तो अपने मूल्यों से समझौता करना चाहते थे और ना ही अपनी सोच बदलना परन्तु दूसरी तरफ जग प्रसिद्ध त्रियाहट। रानी बहुमूल्य वस्त्रों और गहनों की बात पर अड़ी थी। विवेकी राजा ने मध्यम मार्ग खोजा जिससे की रानी का हठ भी रह जाए और उन्हें सबक भी मिल जाए। राजा ने राजमंत्री को बुलाकर किसी समृद्ध राजा से कर के रूप में सवा मन सोना वसूलकर लाने का आदेश दिया। उस समय सबसे समृद्ध राजा थे राक्षसराज रावण। मंत्री ने सहमते हुए दशानन रावण का नाम सुझाया।

राजा चक्रवेणु ने कहा "हाँ. हाँ. राक्षसराज रावण तक मेरा संदेश ले जाओ और कर के रूप में सवा मन सोना ले आओं" राजा की आज्ञानुसार मंत्री जी चल पड़े रावण से सोना वसूलने।

मंत्री ने लंका पहुँचकर लंकापति रावण को महाराज चक्रवेणु का संदेश सुनाया संदेश सुनते ही राक्षसराज रावण पर मानो आकाश फट पड़ा। साक्षात् अहंकार स्वरूप रावण जिससे इन्द्र सहित देवता, यक्ष, किन्नर सब भय खाते हैं उनसे कोई कर वसूलने की कल्पना भी कैसे कर सकता है। देवजयी रावण क्रोध में आग बबूला होकर अनर्गल कुछ भी कहे जा रहे थे परन्तु मंत्रीजी शांत थे। उन्होंने रावण से निवेदन किया महाराज आप भले ही दिग्विजयी हो किन्तु प्रजा पालक चक्रवेणु के प्रभाव से आप परिचित नहीं है। बल केवल सैन्य बल या धन बल नहीं होता। सदाचरण और सत्य पालन करने वालों में एक अलग तरह की तेजस्विता होती है। आप लंका से बाहर समुद्र तट पर पधारे मैं आपको एक कौतुक दिखाता हूँ। चूंकि दूत का वध करना न्याय संगत नहीं था अतः रावण का क्रोध कुछ कम हुआ। वे इस कौतुक को देखने अपने राज दरबारियों सहित समुद्र तट पर पधारे।

राजमंत्री ने तट पर बिखरी रेत से लंका दुर्ग की एक प्रतिकृति बनाई। ये तमाशा रावण की समझ में नहीं आ रहा था पर वे इसे बड़े ध्यान से देख रहे थे। राजमंत्री ने राजा चक्रवेणु के पुण्य की दुहाई देकर रेत की लंका का पूर्वी द्वार ढहा दिया किन्तु ये क्या चमत्कार घटित हुआ, नकली लंका के पूर्वी द्वार के ढहते ही असली लंका का पूर्वी द्वार भी भर-भराकर ढह गया। सारे लोग आश्चर्य से भर गए और दिग्विजयी रावण इस कौतुक से भय खा गए। चतुर रावण ने सवा मन सोना देकर इस बिन बुलाई विपत्ति से पीछा छुड़ाना ज्यादा उचित समझा। राजमंत्री सोना लेकर वापस राजा चक्रवेणु के राज्य पधारे। राजा ने वह सोना वस्त्र, आभूषण के लिए राजरानी को भेंट कर दिया परन्तु जब सोने के पीछे की कथा राजरानी ने सुनी तो वे अपनी जिद पर लज्जित हुईं। उनके पति के पुण्य और प्रभाव से प्रतापी रावण भी भय खाता है तो फिर असली गहने तो सदाचरण और प्रजा पालन ही है। राजरानी ने आदर सहित वह सोना राक्षसराज रावण को लौटा दिया। महारानी समझ गई थी असली गहने सोने के नहीं सदाचरण, स्वधर्म में निष्ठा और राजा की तरह प्रजा पालन है। इस घटना ने अहंकारी रावण को भी बोध दिया कि देवताओं से जीतना सहज है पर सत्यव्रती, सदाचारी, सदकर्मी मनुष्य से नहीं। ■

*(**शिक्षा-** चरित्र की चमक सोने से अधिक होती है। सदाचार का बल किसी भी शक्ति पर भारी होता है। स्वधर्म अर्थात स्वयं का स्वभाव ही ठीक है, दूसरों की नकल में हमारा ही नुकसान है।)*

# रियल एस्टेट एजेन्ट से पाएँ स्टेटस

**रियल एस्टेट एजेन्ट की भूमिका -**

रियल एस्टेट एजेन्टस जिस शहर में कार्य कर रहा है उस शहर की भौगोलिक स्थिति की पूरी जानकारी रखे। किस जगह का क्या रेट है, किराया कितना है, रजिस्ट्री के लिए मानक दर क्या है, आदि पता होना चाहिए। कई बार, ग्राहक अपनी जमीन का भवन का मूल्यांकन कराने के लिए रियल एस्टेट एजेन्ट के पास आते हैं।

**किसी को जमीन बेचना है तो किसी को दुकान किराए से देना है। सरकारी कम्पनियों को अपने कार्यालय के लिए भवन चाहिए तो किसी को कार्यालय बदलना है। आजकल कुछ सरकारी कार्यालय, अपने अनुपयुक्त स्थान को किराए से देकर अपनी आय बढ़ाना चाहते हैं। जाहिर है कि रियल एस्टेट एजेन्ट के लिए काफी अवसर हैं।**

■ डॉ. हरीशकुमार सिंह, उज्जैन

रियल एस्टेट एजेन्ट्स का महत्व काफी बढ़ गया है। अचल सम्पत्ति का उचित निबटान या निर्वहन करने के लिए रियल एस्टेट एजेन्ट की जरूरत पड़ती है। पहले जो कार्य ब्रोकर या एजेन्ट करते थे, उन्हीं कार्यों को विस्तार देकर, रियल एस्टेट एजेन्ट कार्य कर रहे हैं। रियल एस्टेट एजेन्ट केवल सम्मानजनक नाम ही नहीं वरन सम्मानजनक व्यवसाय भी है। रियल एस्टेट एजेन्ट के लिए मार्केट बहुत बढ़ गया है। रियल एस्टेट एजेन्ट मूलतः मध्यस्थ ही होते हैं तथा दोनों या कम से कम एक पक्ष से सौदे की राशि पर निर्धारित कमीशन प्राप्त करते हैं।

**रियल एस्टेट एजेन्ट का कार्यक्षेत्र -**

भवन निर्माण के क्षेत्र में इस समय बड़ी-बड़ी कंपनिया, औद्योगिक समूह कूद गए हैं। सेटेलाईट टाउनशिप, सिटी और होम्स की लम्बी श्रृंखलाएँ बन रही हैं। एकल या समूह रूप में बिल्डर्स भी निर्माण कार्य कर रहे हैं। होम लोन की सुविधा अधिक से अधिक होने से खरीददार भी बढ़ रहे हैं। बैंक एवं कई वित्तीय संस्थान होम लोन के लिए खरीददारों को ढूंढ रहे हैं। किसी को मकान खरीदना है तो किसी को किराए से मकान चाहिए। किसी को जमीन बेचना है तो किसी को दुकान किराए से देना है। सरकारी कम्पनियों को अपने कार्यालय के लिए भवन चाहिए तो किसी कार्यालय को बदलना है। आजकल कुछ सरकारी कार्यालय, अपनी अनुपयुक्त स्थान को किराए से देकर अपनी आय बढ़ाना चाहते हैं। जाहिर है कि रियल एस्टेट एजेन्ट के लिए काफी अवसर है।

**रियल एस्टेट एजेन्ट का सम्पर्क प्रबंधन-**

रियल एस्टेट एजेन्ट की तरह ही रियल एस्टेट डेवलपर्स होते हैं। रियल एस्टेट डेवलपर्स, भवन आदि का भारी संख्या में निर्माण करते हैं। इन्हें अपने भवन बेचने के लिए रियल एस्टेट एजेन्ट चाहिए। रियल एस्टेट एजेन्ट एवं रियल एस्टेट डेवलपर्स एक दूसरे के पूरक होते हैं। आपस में गठबंधन कर दोनों अपना मार्केट ढूंढ सकते हैं। रियल एस्टेट एजेन्ट को डेवलपर्स की पूरी जानकारी, भवन की कीमत, क्षेत्रफल और आवश्यक कागजात की जानकारी होना चाहिए। रियल एस्टेट एजेन्ट को होम लोन दिलाने में भी मध्यस्थ की भूमिका अदा करनी पड़ती है अतः होम लोन दिलाने के लिए जरूरी आवश्यकताओं पर नज़र रखें।

रियल एस्टेट एजेन्ट को अखबारों में छपने वाले विज्ञापन जैसे - जगह चाहिए, किराए से लेना या देना है, बेचना है, खरीदना है आदि पर ध्यान रखना चाहिए। अधिक से अधिक अखबार पढ़कर यह जानकारी प्राप्त कर सम्पर्क किया जा सकता है। कई बार सरकारी कार्यालय ही अपनी जगह किराए से देने या लेने के लिए विज्ञापन जारी करते हैं, रियल एस्टेट एजेन्ट को अपने कार्यालय की जानकारी, सम्पर्क का पता, फोन नम्बर इत्यादि का विवरण, स्वयं शहर के सभी कार्यालयों को पत्र लिखकर सूचित करना चाहिए। अखबारों में विज्ञापन देकर भी रियल एस्टेट एजेन्ट अपना प्रचार-प्रसार कर सकता है। अपनी सेवाओं को प्रचारित करें तथाा विश्वास अर्जित करें।

शहर के लोगों को प्रेरित करें कि वह अपनी खाली जमीन, मकान को बेचना है या किराए से देना है का विशुद्ध रजिस्ट्रेशन आपके यहाँ दर्ज कराएं। दोनों पक्षों के मध्य उचित सौदा कराकर अपना उचित कमीशन प्राप्त करें और सम्मानजनक स्थान पाएँ। ■

# सफलता चाहिए तो बनिये क्रियाशील

■श्याम पलौड़, उज्जैन

**अध्ययनों से सिद्ध हुआ है कि क्रियाशीलता का न केवल स्वास्थ्य पर बल्कि मन पर भी बेहद सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। कोई भी कार्य पूरी क्रियाशीलता के साथ करने से जो खुशी और संतुष्टि मिलती है, वह अद्वितीय होती है। पूरी क्रियाशीलता और रचनात्मकता के साथ कार्य में रत् रहने पर मन और मस्तिष्क एकाग्रचित हो जाता है, शरीर की ऊर्जा में वृद्धि होती है और शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता में भी वृद्धि होती है। सफलता के इस मूलमंत्र को अपने जीवन में कैसे उतारें, जानिये इस आलेख में-**

सफलता की चाह हर व्यक्ति को होती है। सभी चाहते है जीवन के जिस किसी भी क्षेत्र में उनका पदार्पण हो, सफलता उनके कदम चूमे, लेकिन इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जरूरी है, सतत् प्रयास और काम के प्रति तन्मयता या क्रियाशीलता की। निरंतर अभ्यास में जुटे रहना और किसी भी कार्य को पूरी क्रियाशीलता से करना कार्य की सफलता का पहला मूलमंत्र है। जीवन में प्रारंभ से लेकर अंत तक प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में अनेक छोटे-बड़े कार्यों का दायित्व आता है और क्रियाशीलता से करने की प्रवृति ही भविष्य में सफलता की ओर अग्रसर करती है और इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति कार्य को बेहद अनमने ढंग से लेता है या कार्य के प्रति लगनशील नहीं रहता है तो उसकी सफलता भी संदिग्ध ही रहती है।

यह तो सर्वमान्य सत्य है कि क्रियाशीलता और तन्मयता के अभाव में किया गया कोई भी कार्य जीवन में रूचिकर परिणाम नहीं दे सकता। जब भी आप किसी कार्य को पूरी निष्ठा और क्रियाशीलता के साथ करते हैं, तब आप स्वतः ही बेहद उत्साहित, प्रसन्नचित व हल्का महसूस करने लगते हैं और जैसे-जैसे कार्य समाप्ति के पड़ाव पर पहुँचने लगता है, आपका कार्य के प्रति उत्साह भी उसी तेजी से बढ़ने लगता है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो किसी भी क्षेत्र से जुड़े हो अपनी सफलता का निचोड़ निकालते हुए यही तर्क देते हैं कि वे सदैव अपने काम को करने में आनंद महसूस करते हैं और रोमांचित होते हैं। वे अपने कार्य को पूरी क्रियाशीलता से करते हैं और कार्य को करते हुए बोरियत महसूस नहीं करते इसलिए उसका काम बेहद अच्छा परिणाम देता है।

अध्ययनों से सिद्ध हुआ है कि क्रियाशीलता का न केवल स्वास्थ्य पर बल्कि मन पर भी बेहद सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। कोई भी कार्य पूरी क्रियाशीलता के साथ करने से जो खुशी और संतुष्टि मिलती है, वह अद्वितीय होती है, जो और कहीं नहीं मिलती। पूरी क्रियाशीलता और संरचनात्मकता के साथ कार्य में रत् रहने पर मन और मस्तिष्क एकाग्रचित हो जाता है और शरीर की ऊर्जा में वृद्धि होती है और साथ ही शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता में भी वृद्धि होती है।

क्रियाशीलता हर व्यक्ति के निजी व्यक्तित्व और स्वभाव पर निर्भर करती है, लेकिन इसकी निरंतर वृद्धि करते रहना बेहद आसान है। इसके लिए अपने व्यक्तित्व में कुछ गुणों का समावेश करना बेहद जरूरी है। किसी भी व्यक्ति के

व्यक्तित्व में क्रियाशीलता के अभाव के कई कारण हो सकते हैं, लेकिन विशेष तौर पर प्रोत्साहन की कमी ही इसका मुख्य कारण है। जैसे कई बार अन्य व्यक्तियों द्वारा आपके किए गए कार्य की आलोचना से हतोत्साहित होने पर भी क्रियाहीनता जन्म लेती है। ऐसी स्थिति में स्वयं को हताशा में डूबने और क्रियाशीलता से बचाने के लिए यह सोचें कि आप अद्वितीय है और किसी भी कार्य को श्रेष्ठ ढंग से करने का प्रयास करें। यह अपने व्यक्तित्व-विकास का बेहद प्रभावशाली प्रयोग है, जो निश्चय ही सफलतापूर्वक कार्य करता है।

बुरे अनुभवों व मानसिक अवरोधों को अपनी क्रियाहीनता का कारण न बनने दें, बल्कि उन्हें भुलाकर वर्तमान व भविष्य के प्रति खुली सोच और सकारात्मक नजरिया रखते हुए अपने व्यक्तित्व में प्रबल इच्छा शक्ति का विकास करें, जिससे आपकी क्रियाशीलता में भी निरंतर वृद्धि हो। रचनात्मक या क्रियात्मक कार्य करने के लिए सहीं लक्ष्य का चुनाव भी बेहद आवश्यक है। इसके लिए स्वयं अपनी बुद्धिमत्ता पहचानें। सही चुनाव में यह निर्धारित करें कि आप क्या करना चाहते हैं, फिर उसके उपरांत निरंतर उसी दिशा में पूरी क्रियाशीलता से जुट कर कार्य करें और उन सभी नकारात्मक दृष्टिकोणों को प्रबल इच्छाशक्ति के द्वारा दूर कर दें, जिनके कारण आप जीवन के किसी भी मोड़ पर अपना नियत कार्य करने में असफल रहे हों।

क्रियाशीलता बढ़ाने के लिए व्यक्तित्व में आत्मविश्वास बढ़ाना भी बेहद जरूरी है, क्योंकि जो व्यक्ति पूर्ण आत्मविश्वास से भरा है, उसे ऐसा महसूस होता है कि वो जो कुछ भी कर रहा है, वह क्रियात्मक है लेकिन इसके विपरीत आत्मविश्वास की कमी होने पर व्यक्ति निरंतर गलतियाँ करने लगता है, जो उसमें क्रियाहीनता को बढ़ावा देती है। कोई निर्धारित क्षेत्र किसी भी व्यक्ति को उसके लक्ष्य में सफलता प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त क्रियाशीलता को बढ़ाने के लिए सिद्धांतवादी बनने की दिशा में प्रयासरत रहें, जिससे आप बिना किसी डर के दिवास्वप्न देख सकेंगे और सफलता के लिए पूरी लगन और विश्वास के साथ हर छोटा-बड़ा कार्य करेंगे,जो कि आपकी क्रियाशीलता को ही बढ़ाएगा। इससे आपके मस्तिष्क को भी ऊर्जा संयोजित करने का मौका मिलेगा और आपके काल्पनिक शक्ति के विकास को नई दिशा मिलेगी।

क्रियाशीलता को बढ़ाने के लिए उपचार पद्धति सीखना भी एक अच्छा उपाय है। जब आपका मन सुषुप्ता अवस्था में कोई कल्पना करके उसका तर्क और समाधान ढूँढता है, तब मन को आतंरिक शांति मिलती है और भविष्य के प्रत्येक कार्य को बेहतर ढंग से करने के प्रयास को प्रेरणा मिलती है। उपचार पद्धति से आप पहले से ही भविष्य में आने वाले मानसिक अवरोधों और दुष्परिणामों के प्रति सचेत हो जाते हैं और भविष्य में कभी भी किसी कार्य में असफलता मिलने वाली निराशा और कुंठा से बच जाते हैं।

अन्य व्यक्तियों की क्रियात्मकता से भी प्रेरणा लें। कोई भी दूसरा व्यक्ति जो अपने कार्यों की पूरी क्रियाशीलता से करता हो, उसकी सराहना करें और उसी के आदर्शों पर चलते हुए मन और कर्म से अपनी क्रियाशीलता को बढ़ाने की ओर सदैव प्रयासरत रहें। इसके अतिरिक्त अपनी रूचि के कार्य करना और अन्य रचनात्मक कार्य करना भी अपनी क्रियाशीलता को बढ़ाने का अच्छा माध्यम है। ■

जीवन-प्रबंधन

# सत्य कहीं भी हो सत्य ही रहता है

■ **पं. विजयशंकर मेहता**, उज्जैन

**ल**क्ष्य किसी का कोई भी हो पहुंचने के तीन ही मार्ग है - ज्ञान, कर्म और उपासना। इसका बेहतर सन्तुलन ही जीवन प्रबंधन है। यदि यह समझ में आ जाए कि ज्ञान का लक्ष्य सत्य को पाना है, कर्म की सफलता उसकी निष्कामता में है तथा उपासना की पूर्णता समर्पण में है तो जीवन प्रबंधन से कोई भी मनुष्य सही परिणाम पा सकता है। पिछले एक माह से अमेरिका यात्रा के दौरान मैने यहाँ जीवन प्रबंधन के अनेक प्रयोग और परिणाम देखे।

ज्ञान मार्ग पर चलते हुए सत्य को श्री सत्यनारायण कथा से समझा जा सकता है। कर्म मार्ग पर निष्कामता को कैसे साधा जाए इसके लिए गीता के दूसरे अध्याय के अंतिम 18 श्लोक में वर्णित स्थित प्रज्ञ का चरित्र उपयोगी है। उपासना मार्ग में पूर्ण समर्पण कैसे हो इसे जानने के लिए श्री हनुमान चालीसा का सहारा लिया जाए। इन तीनों में जीवन प्रबंधन के सूत्र हैं। अमेरिका के सात नगरों में भ्रमण करते हुए इस विषय पर व्याख्यानों के दौरान यह देखने में आया कि यहाँ की सफलता में भारतीय संस्कृति के इन तीन विषयों में वर्णित सूत्र बड़े उपयोगी रहे है।

मुझे चार स्थानों पर श्री सत्यनारायण व्रत कथा कहने का अवसर मिला। श्रद्धा, विश्वास और अनुष्ठान का भाव तो पारंपरिक ही था किन्तु ज्ञान व सत्य को प्राप्त करने के जीवन प्रबंधन के नए दृष्टिकोण में यहाँ यह स्वीकार किया गया कि यह कथा मात्र पारंपरिक आयोजन न होकर चिंतन और प्रबंधन की सफलता का सूत्र हो गई थी। जितनी इसमें अनुसंधानिक विधि भी आना ही आधुनिक सोच था। सत्य के कृत संकल्प और इसकी विस्मृति तथा प्रसाद के अपमान को नए दृष्टिकोण से स्वीकार कर जीवन में उपयोगी बनाने का उत्साह भी अमेरिका में बसे हमारे भारतीय मूल के नागरिकों में नजर आया।

इस कथा में प्रसाद की विस्मृति और प्रसाद के अपमान के दो प्रमुख सूत्र है संकल्प की विस्मृति यानी जीवन से सत्य की विस्मृति और प्रसाद का अपनाना यानी सत्य का अपमान कथा सामान्य रूप से यहीं कहती है कि जब-जब हम जीवन में सत्य की स्थिति ओर अपमान करेंगे हमारा जीवन संकट में पडेगा।

इस कथा के आरंभ में ही नारद ने विष्णु जी को मनुष्यों के दुख दूर करने का उपाय पूछा है। यह भी इस कथा की विशेषता है कि यह दुःख दूर करने का उपाय है। यह योग उपयोग का युग है, हरेक को अपनी सफलता के लिए एक फंडा चाहिए। यह कथा पूर्ण धार्मिक, सम्पूर्ण आध्यात्मिक, नितान्त पारंपरिक, परन्तु अत्यधिक आधुनिक दृष्टिकोण, गतिशील भाव और प्रगतिशील विचारों से ओतप्रोत है। इसी कारण सात समंदर पार हजारों मली दूर अमेरिका में भी सत्य का स्वरूप वही रहा जो भारतीय संस्कृति में वर्णित है। जीवन प्रबंधन का पहला मार्ग इसी कारण यहां सबको समझ में

*(पं. विजयशंकर मेहता इन दिनों 22 अगस्त से 2 अक्टूबर तक अमेरिका यात्रा पर है जहां इस विषय पर इनका व्याख्यान हो रहा है।)*

स्वर्ण-सूत्र

# दुःख से मुक्ति

**इ**स विषम संसार में दुःख और क्लेश किसी को सताये बिना नहीं छोड़ते इसका मुझे अच्छी तरह अनुभव हो चुका है। मैं दुःख या विपत्ति के प्रसंग में जरा भी नहीं घबराता। बार-बार घोर कष्टों के आने पर भी दुःख की सत्ता का असर अपने ऊपर किंचित मात्र भी नहीं होने देता। रूला देने वाले विकट प्रसंग आने पर भी मैं एक आंसू भी नहीं गिराता। स्त्री, पुत्र, मान-प्रतिष्ठा, धन, ऐश्वर्य सर्वस्व नष्ट होने पर भी परमेश्वर की श्रद्धा को नहीं छोड़ता।

दुःखों का पहाड़ टूट पड़ने पर भी अपनी श्रद्धा से ज़रा भी विचलित नहीं होता। दुःख, संताप की भट्टी में जलकर मेरी आत्मा विशुद्ध हो रही है। मैं किसी भी भय के अधीन नहीं हो सकता। मुझमें ऐसा ज्ञान प्रदीप्त हो गया है कि मेरे सब मोह, शौक नष्ट हो गये हैं। दिन में, रात में, अंधकार में, प्रकाश में, विपद में, संपद में, अनुकूलता में, प्रतिकूलता में, सब अव्यस्थाओं में सदा निर्भय हूँ। परमात्मा मुझ पर तो अमृत की वर्षा कर रहा है। मेरा चित्त, मन, हृदय निरंतर इस महासत्य पर स्थिर हो गया है कि संसार के सब दुःख, क्लेश, भय, संकट, क्षणभंगुर है, चले जाने वाले हैं। परमात्मा ही एक सत्य है उसी के एकमात्र आधार पर मैं जीता हूँ। उसी की शरण में पड़ा हुआ हूँ। उसके सामने विपत्ति दुःख के बादल क्षणभर नहीं ठहर सकते, उसी समय छिन्न-भिन्न हो जाने वाले हैं। कोई भी भारी से भारी बंधन, भय, दुःख, क्लेश मेरी श्रद्धा को हिला नहीं सकता। मेरी आत्मा परमात्मा की अमृतदय गोद में विश्राम कर रही है। बाहरी वस्तुओं पर मेरा सुख निर्भर नहीं है। मैं अपने दुःख दूर करने को बाह्य साधन की अपेक्षा नहीं रखता। ■

*(उपरोक्त विचारों को प्रातः उठकर, रात को सोते समय तथा दिन में कई बार शांत मन होने की स्थिति में दोहराने पर कुछ दिनों में ही समस्त दुःखों से मुक्ति प्राप्त हो जाती है।)*

# वास्तुदोष अनेक-इलाज एक

# यंत्र-15

**यंत्र 15 की सबसे बडी ख़ासियत है कि ये घर के वास्तुदोषों को बिना तोड़-फोड़ के ठीक करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। आईये जाने वास्तुदोष निवारण में अंकों की भूमिका के बारे में-**

■ **किशोर राठी**, उज्जैन

जिस प्रकार वास्तुशास्त्र में प्रत्येक दिशा का एक निश्चित स्वामी, नक्षत्र या देवता होता है ठीक उसी प्रकार हर दिशा का एक निश्चित अंक भी होता है। यूँ तो प्रचलित वास्तुशास्त्र में प्रत्येक भवन की आंतरिक एवं बाहरी साज-सज्जा के रूप-रंग एवं अन्य विभिन्न व्यवस्थाओं के विषय में व्यापक चर्चा की गई है परंतु जब भी वास्तुदोषों के निवारण की बात आती है, तब वास्तुशास्त्र में अंकों का महत्व और भी बढ़ जाता है।

प्राचीन भारतीय वैदिक ज्ञान एवं विज्ञान में जब दैनिक जीवन के विभिन्न क्रियाकलापों एवं धार्मिक अनुष्ठानों को सम्पन्न किया जाता था। उस समय भी प्रायः नवग्रह, सप्तऋषि, तीन लोक, चार युग, पंचतत्व जैसे शब्दों के प्रयोग से इस तथ्य को पर्याप्त बल मिलता है कि मानव अंकों के महत्व एवं प्रयोग से भली-भांति परिचित रहा है।भारतीय आध्यात्म से संबद्ध तंत्र-मंत्र एंव यंत्र की विधाओं ने अनेकों ऐसी चमत्कारी आकृतियों को जन्म दिया जिनका प्रयोग हमारा समाज काफी लंबे समय से करता चला आया है।

यंत्रों की इस लंबी शृंखला की एक कड़ी है- **यंत्र पंद्रह** जो कि नौ छोटे-छोटे व समान वर्गों द्वारा स्वयं में भी एक ऐसी वर्गाकार आकृति की रचना करती है, जिसमें लंबवत एवं समांतर पंक्तियों अथवा चारों कोनों से तिरछे (क्रॉस) बनने वाली रेखाओं पर स्थित वर्गों में चिहिन्त अंकों का योग प्रत्येक स्थिति में पंद्रह आता है। इस यंत्र की रचना इस प्रकार है - इस यंत्र में ऊपर की पंक्ति उत्तर दिशा के अंकों को, दाईं ओर की खड़ी पंक्ति पूर्व दिशा के अंकों को दर्शाती हैं। इस आकृति के बिल्कुल मध्य में दर्शित वर्ग ब्रह्म स्थान (आकाश तत्व) का घोतक है।

**फेंगशुई में भी प्रचलित -**

आश्चर्यजनक रूप में चीन में प्रचलित वास्तु विद्या जिसे फेंगशुई भी कहा जाता है। उसमें इसी यंत्र पंद्रह का बहुतायत से प्रयोग किया जाता है। चाइनीज़ वास्तुशास्त्र में इस यंत्र को लो-शू के नाम से जाना जाता है। एक चाईनीज़ किवदंती के अनुसार लगभग

| | | |
|---|---|---|
| ४ | ९ | २ |
| ३ | ५ | ७ |
| ८ | १ | ६ |

5000 वर्ष पूर्व भिन्न-भिन्न दिशाओं व उनकी संख्याओं के परस्पर संयोग, तालमेल एवं महत्व में छिपे प्राकृतिक रहस्यों की खोज में भटकते हुए किसी चीनी सन्यासी को एक नदी के किनारे रेंगता हुआ एक कछुआ मिला जिसने चीनी सन्यासी के आगे-आगे एक पथ प्रदर्शक की तरह चलना शुरू कर दिया। ध्यान से देखने पर सन्यासी ने पाया कि इसी कछुए की पीठ के मजबूत खोल पर प्राकृतिक रूप से यही यंत्र पंद्रह बना था। इसी की सहायता से चाइनीज, फेगंशुई, दिशाओं में संख्याओं का योगदान समझाने में समर्थ एवं सक्षम हो सकी।

जहाँ एक ओर भारतीय धर्म-शास्त्रों के अनुसार यह यंत्र-15 व्यापारिक प्रतिष्ठानों में व्यावसायी के बैठने की गद्दी के पास या तिजोरी पर शुभ मुहूर्त में व पूजा के समय अंकित किया जाता है, वहीं दूसरी ओर चाइनीज़ वास्तु में इस आकृति में अंकित भिन्न-भिन्न अंकों को किसी भी भवन की आठों मुख्य व नौवी आकाश नामक दिशा के परिप्रेक्ष्य में बहुतायत से प्रयोग किया जाता है। एक लंबी दूरी पर पनपी दो भिन्न-भिन्न सभ्यताओं एवं संस्कृतियों (भारतीय एवं चीनी) में किसी एक आकृति का समान रूप एवं पवित्र भावना से प्रयोग किया जाना जहाँ एक ओर आश्चर्य देता है वहीं दूसरी ओर यह अंकों एवं दिशाओं के परस्पर सम्बन्धों को और भी मजबूत कर देता है। यंत्र 15 की सबसे बडी खासियत यह है कि यह घर के वास्तु दोषों को बिना तोड़-फोड़ के ठीक करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

**अंको द्वारा वास्तुदोष निवारण -**

'लो-शू' में ऊपर अंकित दाईं ओर के अंक 8 का प्रयोग उत्तर-पूर्व दिशा के वास्तुदोषों को दूर करने में किया जाता है। 8 का अंक सुख-समृद्धि का घोतक है। यह सौभाग्य एवं ज्ञान को बढ़ाने में पूर्णतया सक्षम समझा जाता है। पूर्वोत्तर की ईशान दिशा मे यदि कोई वास्तुदोष हो तो इस दिशा में 8 के अंक का ज्यादा प्रयोग करें। जैसे -8 अंगुल की ऊँचाई के स्वस्तिक के चिन्ह या इतनी ऊँचाई की देव-प्रतिमा का पूजा स्थान में प्रयोग। इसके अतिरिक्त यहां 8 प्रकार के फूलों के पौधे लगाने से इस दिशा के अंक

को बल मिलेगा, जिसके फलस्वरूप यहां की सकारात्मकता में वृद्धि होगी तथा वास्तुदोष की नकारात्मक या हानिकारक प्रवृत्ति स्वतः कम हो जाएगी।

**शुभ फल की प्राप्ति के लिए -**

पूर्व दिशा मे दर्शित वर्ग में स्थित 3 की संख्या द्वारा पर्व के वास्तुदोषों को नियंत्रित किया जा सकता है। यहां पर भी काष्ठ या लकड़ी की 3 वस्तुएं शोपीस या लकड़ी के फ्रेम में सजाई हरी-भरी जंगल की 3 पेटिंग्स प्रयोग करे तो सूर्य की दिशा पूर्व काष्ठ तत्व द्वारा बुजुर्गों की कृपा एवं सहयोग में वृद्धि की जा सकती है। दक्षिण पूर्व में स्थित वर्ग की संख्या 4 के लिये यदि हम इस दिशा में संतरे के 4 पौधों के साथ, एक-एक अन्य पौधा जो कि देखने में सुन्दर हों, लगाएं तो जमीन, जायदाद, धन व इसी प्रकार की सम्पत्ति में वृद्धि हो सकती है।

लकड़ी तत्व के साथ दक्षिण पूर्व एवं सम्पत्ति का गहरा सम्बन्ध है। यहां भी हरे-भरे जंगलो के पोस्टरों एवं हरा रंग प्रयोग कर इस दिशा के वास्तु दोषों को नियंत्रित किया जा सकता है। लो-शू की दक्षिणी दिशा में वर्ग की संख्या 9 के द्वारा दक्षिण दिशा के वास्तु दोषों को दूर किया जा सकता है। यहां लाल रंग की 9 छड़ों या पाइपों की विंड चाइम (पवन घण्टी) द्वारा समाज में प्रतिष्ठा में अनुभव की जाने वाली वस्तु समस्याओं से निजात मिल सकती है। वैसे भारतीय वास्तु शास्त्रीय पद्वति में यह मंगल ग्रह की दिशा है जो कि लाल रंग द्वारा सुगमता से अनुकुल बनाई जा सकती है। वैसे भी भारतीय शास्त्रीय पद्धति में यह मंगल ग्रह की दिशा है जो कि लाल रंग द्वारा सुगमता से अनुकूल बनाई जा सकती है। दक्षिण-पश्चिम में स्थित दो का अंक मास्टर बेडरूम एवं पति-पत्नी के बीच सम्बन्धों को दर्शाता है इसीलिये यहां लव बर्ड्स का एक जोड़ा, मेंडारिन डक्स का एक जोड़ा या शुद्व क्रिस्टल बॉल्स का एक जोड़ा जो कि लाल रंग के धागे रिबन या मौली से बांधकर यहां बने पति-पत्नी के कमरे में दक्षिण-पश्चिमी कोने में लटकाया गया हो व परस्पर एक-दूसरे से सटा रहे। ये ऐसी सुन्दर वस्तुएं हैं जो कि न केवल आपके कमरे में सुन्दर शोपीस का काम करेगी। अपितु विवाहित जोड़े के बीच प्रेम सम्बन्धों को और

# आसानी से घर को दें नया रूप

***अगर आप अपने घर को कम से कम समय और खर्च में नया और आकर्षक रूप देना चाहती है तो इसके लिये आप कुछ सुझावों पर अमल करे तो आप बिना किसी परेशानी के अपने घर को नया रूप दे सकती हैं -***

- अगर आप अपने घर की सजावट की एकरसता से ऊब गई हैं तो आप अपने कमरों को सुन्दर चमकीले रंगो जैसे आसमानी, ऑलिव ग्रीन, चॉकलेट ब्राउन और पीले के कलर कॉम्बिनेशन से सजाएं। आप ड्राइंग रूम के कुशन कवर और परदों का रंग बदलकर यह काम आसानी से कर सकती हैं।
- अगर आप अपने घर की साज-सज्जा में बदलाव लाना चाहती हैं तो अपनी बालकनी में लटकती टोकरियों मे हरे-भरे बेलदार पौधे लगाएं। लकड़ी की सुन्दर नक्काशीदार सजावटी चीजें, क्रिस्टल के सुन्दर शो पीसेज से सजाएं। अपने ड्राइंग रूम में एक छोटा- सा सुन्दर बुक शेल्फ रखें। किचन के शेल्फ कुछ सुन्दर सजावटी चीजें रखकर सजाएं।
- अपने किचन को भी हमेशा समय के अनुसार मॉडर्न लुक देने की कोशिश करें। आप अपने किचेन के लिये डिजाइन का कॉफी मेकर या टोस्टर ले आएं। किचन में नयापन लाने के लिये क्रॉकरी का जो सेट इस्तेमाल कर रही हैं उसे पैक करके कुछ दिनों के अलग रख दें और थोड़े दिनों तक दूसरा क्रॉकरी सेट निकालकर इस्तेमाल करें। अपने टी सेट को नई टीकोजी से सजाएं।
- अपने बेडरूम मे प्रवेश करते ही आपकी नजर सबसे पहले बेड पर पड़ती है इसलिये आप अपने बेड को आकर्षक रंग के बेडकवर से सजाएं और तकिये पर भी प्लेन पीलो कवर लगाने की बजाय रंगीन फ्लोरल प्रिंट वाले पिलो कवर लगाएं।
- आप अपने घर की खिडकियों को अनदेखा न करे। उन्हें भी आप अपनी सूझ-बूझ से नया रूप दे सकती हैं। आप अपनी खिड़की के परदे को हटाएं नही बल्कि उन्हें एक किनारे करके अपने कमरे से मैच करती चिक टांगे जिसमें सुन्दर चित्र बने हुए हो ।
- समय-समय पर अपने घर के लैम्प शेड्स को भी बदलती रहें। इससे आपको नई ताजगी का एहसास होगा। इसके लिये आप सिल्क, टेराकोटा, ओर हेडमेट पेपर से बने विभिन्न ज्यामितिक आकृतियों वाले कलात्मक लैम्प शैड्स का इस्तेमाल करें। अपने घर के स्टडी रूम से अनुपयोगी किताबों और पत्र-पत्रिकाओं को हटाती रहें। स्टडी टेबल के लिये नया पेन स्टेण्ड और स्टेशनरी से जुड़ी नई चीजें लाएं। इससे आपको पढ़ने-लिखने में नई स्फूर्ति महसूस होगी।

अधिक मजबूती प्रदान करेंगी। इसी तरह पश्चिम दिशा में 7 पाईपों की विंड चाईम को जिसका रंग सफेद, सिल्वर या ग्रे हो द्वार पर लटकाकर उसकी मधुर ध्वनि द्वारा संतान सुख प्राप्त किया जा सकता है। यह दिशा परिवार की वृद्धि व हंसते-खेलते बच्चों का क्षेत्र बताया गया है जहां धातु तत्व संतान प्राप्ति एंव उनके विकास हेतु उत्तरदायी है। अतः यहां पर उपरोक्त विधि द्वारा 7 का अंक का वास्तु-लाभ लिया जा सकता है। सहायक मित्रों की दिशा उत्तर-पश्चिम में यदि कोई वास्तुदोष अनुभव हो तो यहां भी पश्चिम दिशा की ही तरह विंड चाइम का प्रयोग कर सकते है क्योंकि इस दिशा का अंक 6 है। अतः यहां पर प्रयोग की जानी वाली विंड चाइम 6 पाइपों की व धातु की होनी चाहिये। भारतीय वास्तु शास्त्र में भी यह दिशा, मित्रों मेहमानों व सहायक व्यक्तियों की घोतक है।

1 का अंक उत्तर दिशा, नीले रंग कैरियर व्यवसाय एवं जल तत्व का द्योतक है अतः यहां पर एक सुन्दर सा फिश एक्वेरियम या एक वाटर फाउंटेन जिसमें नीले रंग का प्रकाश हो सर्वोत्तम रहता है। इसके द्वारा उत्तर दिशा में जल तत्व की अनुपस्थिति, बच्चों के कैरियर में समस्या, बिजनेस में परेशानी आदि वस्तु जनित दोषों को दूर किया जा सकता है। भवन में बिल्कुल मध्य के भाग या ब्रह्म स्थान की दिशा संख्या 5 है। अतः लॉबी में 5 पाइपों की धातु की वं लंबे आकार की पवन घंटी (विंड चाइम) के प्रयोग से तो सम्पूर्ण भवन में ही जीवन ऊर्जा का संचार किया जा सकता है। आजकल विंडचाइम का प्रयोग घर-घर में बहुतायत से हो रहा है जो कि बुरा नहीं परन्तु इनका प्रयोग करने से इसके पाईपों की संख्या व दिशा के बारे में विवार कर ले तो काफी लाभ मिल सकता है। उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि वास्तुशास्त्र मे प्रत्येक दिशा में एक निश्चित अंक का विशेष महत्व होता है एवं उस अंक की प्रधानता वास्तु ऊर्जा में वृद्धि कर वहां के वास्तु दोषों को समाप्त करने की अद्‌भुत क्षमता रखती है। ■

## मुलाहिज़ा फ़रमाइये

*इस बार आधुनिक उर्दू ग़ज़ल के सबसे चर्चित और उम्दा शायरों में से एक जनाब बशीर बद्र के चंद शेर -*

*किसने जलाई बस्तियां, बाजार क्यों लूटे।*
*मैं चांद पर गया था मुझे कुछ पता नहीं।।*

*लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में।*
*तुम तरस नहीं खाते बस्तियां जलाने में।।*

*हर धड़कते पत्थर को लोग दिल समझते हैं।*
*उम्र बीत जाती है दिल को दिल बनाने में।।*

*कोई हाथ भी न मिलाएगा जो गले मिलोगे तपाक से।*
*ये नये मिजाज का शहर है जरा फासले से मिला करो।।*

*हम भी दरिया हैं हमें अपना हुनर मालूम है।*
*जिस तरफ भी चल पड़ेंगे रास्ता हो जाएगा।।*

*सर झुकाओगे तो पत्थर देवता हो जाएगा।*
*इतना मत चाहो उसे वो बेवफा हो जाएगा।।*

*कोई मतलब जरूर होगा मियाँ।*
*यूं कोई कब किसी से मिलता है।।*

**- डॉ. नारायण तिवारी**, उज्जैन

## सुयोग्य जीवन वाटिका के बिखरे सुमन

- शरीर जल से, मन सत्य से आत्मा धर्म से और बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है।
- मनुष्य का सबसे मूल्यवान आभूषण उसका चरित्र है।
- यह बात कुछ महत्व नहीं रखती कि आदमी कैसे मरता है बल्कि महत्व इस बात का है कि वह जीता कैसे है।
- लक्ष्मी शुभ कर्मों से उत्पन्न होती है, चतुरता से बढ़ती है, निपुणता से जड़ बांधती है और संयम से स्थिर रहती है।
- कर्ज वह मेहमान है जो एक बार आकर जाने का नाम नहीं लेता
- लड़ाई में सत्य लुप्त हो जाता है। झूठे आरोपों का सर्वोत्तम उत्तर मौन है।
- वृद्धजन दया के नहीं सम्मान के पात्र हैं। संतान के लिये माता-पिता ही प्रथम गुरु और सर्वथा पूज्य हैं।
- वृद्ध लोगों को सम्पूर्ण स्वाभिमान के साथ अपना शेष जीवन जीने का हक है।
- मानव जीवन में अवगुण वास्तव में जहाज में छोटे छिद्र के समान होता है जो उसको डुबो देता है।
- चिंता से रुप, बल और ज्ञान का नाश होता है।
- जिसके हृदय में सत्य है उसे डरने की आवश्यकता नहीं।
- यदि किसी ने स्वर्ग और नरक नहीं देखा है तो समझ लो कि उद्यम स्वर्ग है और आलस्य नरक है।
- कभी भी इस भ्रम में मत रहो कि पाप प्रारब्ध से होते हैं।
- पाप होते ही हैं हमारी आसक्ति से और उनका फल भी हमें ही भोगना पड़ता है।
- जब मनुष्य विरोध भाव को छोड़कर सबका उपकार करने का प्रयत्न करता है तब शत्रु भी मित्र हो जाते हैं।

**-मुरलीधर मालानी**, आगर (मालवा)

।।श्री।।

।।सदगुरु देवाय नमः।।

रतलाम के सुप्रसिद्ध

# वेलकम® पापड़

मूँग सादा पापड़

स्पेशल पंजाबी पापड़

स्पेशल मूँग बड़ी

चना सादा पापड़

चना खट्टा मीठा पापड़

चना लहसन पापड़

## मेसर्स वेलकम गृह उद्योग

ए-27, पं. दीनदयाल नगर, रतलाम (म.प्र.) फोन - 07412-266017 मो. 09329-310671

**जिला एवं तहसील स्तर पर एजेन्सी देना है, माहेश्वरी बन्धुओं को प्राथमिकता**

# गौनीम

100 प्रतिशत आयुर्वेदिक साबुन

सभी प्रकार के एलर्जी से मुक्ति

दाद, खाज, खुजली, सोरायसिस से मुक्ति

दाग, दाने, झांई, मुंहासे, पिम्पल्स एवं आंखों के नीचे कालेपन से मुक्ति

बालों का असमय गिरना, पकना, डेन्ड्रूफ आदि से मुक्ति

सभी मेडिकल, जनरल स्टोर्स एवं किराना दुकान पर उपलब्ध

गौनीम स्नान

सम्पूर्ण समाधान

एजेन्सी के लिये सम्पर्क करें - विजयंत गौतम

**तिलकेश्वर गौ सेवा सदन**

तिलकेश्वर रोड, भेरूनाला, उज्जैन फोन - 0734-2574138, मो. 98273-09447

*गोरक्षा सम्पूर्ण क्रान्ति है - पु.संत एकलव्यदास महात्यागी*

# श्री माहेश्वरी टाईम्स के क्षेत्रीय प्रतिनिधि

श्री सुशील माहेश्वरी
5/180, चिरंजीव विहार,
गाजियाबाद (यू.पी.)
मो. 9899302894
क्षेत्र - जिला गाजियाबाद (यू.पी.)

श्री गोपाल माहेश्वरी
III-L30, मे. नेहरु नगर,
गाजियाबाद (यू.पी.)
फोन -
क्षेत्र - गाजियाबाद (यू.पी.)

श्री निलेशकुमार चन्द्रशेखर डांगरा
विट्ठल चौक, हुपरी
जिला कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
फोन - 9822370069
क्षेत्र - कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

श्री अशोक धीरन
नंदवाना, जिला विदिशा (म.प्र.)
फोन -
क्षेत्र - जिला विदिशा (म.प्र.)

श्री विजय समदानी
मनासा, जिला नीमच (म.प्र.)
क्षेत्र - जिला नीमच (म.प्र.)

श्री पुरुषोत्तमदास चाण्डक
19/301-ए, आदर्श नगर
आवास विकास कालोनी, आगरा रोड
अलीगढ़ (यू.पी.)
मो. 9897898539
क्षेत्र - अलीगढ़ (यू.पी.)

श्री सुनील दरक
39, एम.जी. रोड,
सोनकच्छ, जिला देवास (म.प्र.)
मो. 9893339909
क्षेत्र - सोनकच्छ (म.प्र.)

श्री एम.एल. गगरानी
41, आदर्श कालोनी, आनंद बाग
सिविल लाईन्स, देवास (म.प्र.)
फोन - (07272) 250683
क्षेत्र - देवास (म.प्र.)

श्री सुमित माहेश्वरी
40, लालवानी कम्पाउंड,
हमीदिया रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन - (0755) 532307
क्षेत्र - भोपाल (म.प्र.)

श्री सुरेश मूंदड़ा
छत्रपति शिवाजी वार्ड,
हरदा (म.प्र.)
मो. 94250-45110
क्षेत्र - जिला होशंगाबाद (म.प्र.)

श्री संतोष कालंत्री
15/3, नार्थ राजमोहल्ला
इन्दौर (म.प्र.)
मो. 9329549466
क्षेत्र - इन्दौर (म.प्र.)

श्री विजय सोमानी
6, जवाहर मार्ग, बदनावर
जिला धार (म.प्र.)
फोन- (07295) 33867, 33776
क्षेत्र - बदनावर (म.प्र.)

श्री धोलेश्वरजी माताजी धोलागढ़ ( राज. )

# समाचार एवं विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें
# श्री माहेश्वरी टाईम्स के क्षेत्रीय प्रतिनिधि

**श्री श्याम माहेश्वरी**
एल.आई.जी.2, 354, इन्दिरा नगर,
उज्जैन (म.प्र.)
फोन - (0734) 2561650,
2580948
क्षेत्र - जिला उज्जैन (म.प्र.)

**श्री अमित डागा**
एफ-20, राधिका काम्पलेक्स,
नया बाजार, लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)
मो. 98273-81531
क्षेत्र - ग्वालियर (म.प्र.)

**श्री महेश कयाल**
फ्लेट नं. जी-2, 448-गोयल नगर, कलाकृति अपार्टमेन्ट, इन्दौर - (म.प्र.)
फोन - (0731) 9300131183
क्षेत्र - इन्दौर (म.प्र.)

**श्री दिलीप गुप्ता**
67, नारायण नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन - 0755-2584098
क्षेत्र - भोपाल (म.प्र.)

**श्री मनीष लड्ढा**
हरिकृपा सिल्क मिल्स, एम/739,
न्यू टेक्सटाइल मार्केट, रिंग रोड, सूरत
फोन - (0261) 2365559
मो. 93745-19887
क्षेत्र - सूरत (गुजरात)

**श्री विनोद कुमार खटोड़**
सी-43, कृष्णा अपार्टमेन्ट,
बोरिंग रोड, पटना (बिहार)
फोन-(0612) 2574973,
2570289
क्षेत्र - पटना (बिहार)

**श्री अशोक माहेश्वरी**
18/91ए, दुर्गापुरी, पटेल नगर, सासनी गेट, अलीगढ़- 202 001
मो. 98370 11245
क्षेत्र - अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

**श्री सुनील माहेश्वरी**
प्लाट नं. 6-बी, विष्णुनगर,
जलगांव (महाराष्ट्र)
मो. 9370002216
क्षेत्र - जिला जलगांव (महाराष्ट्र)

**डॉ. शरद सिकची**
'कृष्ण छाया' केम्प रोड,
अमरावती-444602 (महाराष्ट्र)
फोन - (0721) 2660072
क्षेत्र - अमरावती, चैन्नई

**श्री के.के. मालपानी**
828, 'ब्रजनिवास', शक्तिनगर,
बठिण्डा (पंजाब)
मो. 98156-54841
क्षेत्र - बठिण्डा (पंजाब)

**श्री भगवतीलाल माहेश्वरी**
94, सुभाष मार्ग, अजमेरा की पोल, उदयपुर (राजस्थान)
फोन - (0294) 2425352
क्षेत्र - उदयपुर (राजस्थान)

**श्री आशीष परवाल**
व्हाईट मल्टी, जमीदार कालोनी, रामटेकरी, मन्दसौर (म.प्र.)
फोन - (07422) 504106
क्षेत्र - मन्दसौर जिला (म.प्र.)

**श्री विनय जावंधिया**
लक्ष्मीनगर, मूर्ति रोड,
काटोल जिला नागपुर (महाराष्ट्र)
फोन - (07112) 223742
क्षेत्र - काटोल जिला (महाराष्ट्र)

**सुश्री गोपिका मंत्री**
95, शास्त्री नगर, खण्डवा (म.प्र.)
फोन - (0733) 2249867
क्षेत्र - खण्डवा जिला (म.प्र.)

**श्री रोहित झंवर**
सदर बाजार, बाग जिला-धार (म.प्र.)
फोन - (07297) 267293
क्षेत्र - कुक्षी तहसील (म.प्र.)

**श्री भरत भूतड़ा**
3134, हरि ओम मार्केट, ।। फ्लोर,
रिंग रोड, सूरत (गुजरात)
मो. 98791-23889
क्षेत्र - सूरत (गुजरात)

**श्री भूपेन्द्र जाजू**
हाटपुरा रोड, आगर-मालवा (म.प्र.)
फोन - 258805
क्षेत्र - आगर-मालवा (म.प्र.)

**श्री अर्पण बल्दवा**
श्याम इलेक्ट्रानिक्स, 444,
महात्मा गांधी मार्ग, बड़नगर (म.प्र.)
फोन - (07367) 225846
क्षेत्र - बड़नगर (म.प्र.)

**श्री सी.डी. राठी**
इतवारा वार्ड-3, पोस्ट पुसद,
जिला यवतमाल (विदर्भ)
फोन - (07233) 246954
क्षेत्र - पुसद जिला (विदर्भ)

**श्री गोपाल मोहता**
38, जवाहर मार्ग, नागदा जक्शन
फोन - (07366) 242200, 242118
क्षेत्र - नागदा (म.प्र.)

**श्री अनूप गुप्ता**
'गुप्ता निवास', राम-रहीम नगर,
राधागंज, 42/ए, देवास (म.प्र.)
मो. 09826243046
क्षेत्र - देवास (म.प्र.)

**श्री प्रहलाद मण्डोवरा**
रतलाम (म.प्र.)
फोन - 07412-507038

**श्री हरीश माहेश्वरी**
I1302-1303, ग्राउण्ड फलोर
सूरत टेक्सटाईल मार्केट, रिंग रोड,
सूरत ( गुजरात )
फोन - ( 0261 ) 2321038
क्षेत्र - सूरत ( गुजरात )

**श्री पुरुषोत्तम पनपालिया**
मे. मार्डन फेसेलिटी सेन्टर,
हनुमान लेन, सीताबर्डी
नागपुर ( महाराष्ट्र )
फोन - ( 0712 ) 2541388
क्षेत्र - नागपुर ( महाराष्ट्र )

**श्री सतीश बजाज**
'अभिपूजा' 126, जीवाजीनगर,
नागदा जंक्शन ( म.प्र. )
मो. 98262-80094
क्षेत्र - नागदा ( म.प्र. )

**श्री कपिल माहेश्वरी**
42, त्रिमूर्ति नगर, कोर्ट चौराहा
धार ( म.प्र. )
फोन - ( 07292 ) 235617
मो. 98267-69181
क्षेत्र - धार ( म.प्र. )

**श्री कमलकिशोर कोठारी**
1049, प्रथम माला, सिल्क सिटी
टेक्सटाईल मार्केट, रिंग रोड, सूरत
मो. 98251-32409
क्षेत्र - सूरत ( गुजरात )

**श्रीमती प्रीति राठी**
राठी निकुंज, मानस स्कूल के पास,
डंडापुरा, विदिशा ( म.प्र. )
फोन - 07592-232178
क्षेत्र - विदिशा ( म.प्र. )

**श्री प्रकाश लढ़ा**
156- सदर बाजार,
भीलवाड़ा ( राजस्थान )
फोन - 236007, 234235
क्षेत्र - भीलवाड़ा ( राजस्थान )

**श्री राजेन्द्र लखोटिया**
9-बी/1, वेस्ट मॉडल टाउन,
गाजियाबाद ( यू.पी. )
मो. 9818391752
क्षेत्र - गाजियाबाद ( यू.पी. )

**श्रीमती संगीता माहेश्वरी ( इनाणी )**
मो. 98260-88447
क्षेत्र - भोपाल, इन्दौर ( म.प्र. )

**श्री अशोक माहेश्वरी**
सहारनपुर
मो. 9412233790
क्षेत्र - सहारनपुर ( यू.पी. )

**श्री विपीन माहेश्वरी**
90/बी, वकील रोड, नई मण्डी
मुजफ्फरनगर ( यू.पी. )
मो. 9837080165
क्षेत्र - मुजफ्फरनगर ( यू.पी. )